आचार्य श्री का भीष्म संकल्प

वेद

सम्पादक

उपाचार्य अमित शास्त्री

प्रकाशक

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, भागल-भीम, जालोर

॥ ओ३म् ॥

भारत के प्रख्यात समाजसेवी न्यास के संरक्षक
पूज्यपाद स्वामी धर्मबन्धु जी महाराज

उदारता-करुणा-साहस की प्रतिमूर्ति। ओजस्वी एवं निर्भीक प्रखर राष्ट्रीय वक्ता व चिन्तक। महान् गोभक्त व गौपालक। सत्यार्थ प्रकाश के अप्रतिम प्रचारक। मानवता के प्रबल प्रचारक। वैदिक विद्वान्। भारत के प्रख्यात महानुभावों के आदर, स्नेह व श्रद्धा के पात्र। 28 देशों के भ्रमणकर्ता। कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण भारतवर्ष परन्तु केन्द्र-गुजरात। बहुआयामी प्रतिभा के धनी। भूकम्प-सुनामी-अकाल-बाढ़-निर्धनता-निरक्षरता के प्रति विशेष संवेदनशील व पीड़ितों की सेवा हेतु पूर्ण समर्पण का स्वभाव।

पताः श्री कामधेनु वैदिक गोशाला प्रांसला, वाया-उपलेटा
जिला-राजकोट (गुजरात) फोन : 098252-18303
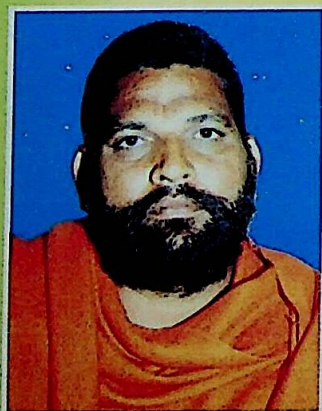
क्रान्तिकारी वैदिक प्रचारक
न्यास के सह संरक्षक -
पूज्यपाद आचार्य स्वदेश जी महाराज

वेद मन्दिर, मथुरा में श्री गुरु विरजानन्द आर्ष गुरुकुल के आचार्य हैं तथा आचार्यत्व के साथ-साथ तपोभूमि मासिक पत्रिका के सम्पादक। ओजस्वी वक्ता, क्रान्तिकारी व्यक्तित्व, उदारता व वीरता के धनी, दयालुता तथा सादगी आपके जीवन के प्रमुख अंग हैं।

पताः श्री गुरु विरजानन्द आर्ष गुरुकुल वेद मंदिर
वृन्दावन मार्ग, मथुरा (उ.प्र.) फोन : 0565-2406431

"ओ३म्"

आचार्य श्री का भीष्म संकल्प

:: सम्पादक ::

उपाचार्य अमित शास्त्री

:: प्रकाशक ::

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
भागल-भीम (जालोर)

वेब साईट- www. vaidic science. com

संस्करण : प्रथम सम्वत् : २०६३

ई-मेल–swamiagnivrat@yahoo.Com

इस पुस्तक का छपाई का सम्पूर्ण व्यय दानवीर श्री अभिषेक आर्य ने वहन किया है। जिनका परिचय पुस्तक के अन्तिम भाग में है।

विषय-सूची

"ओ३म्"

प्राक्कथन

हम जानें कि मानवजाति के उत्पन्न होने के साथ ही परमेश्वर द्वारा चार ऋषियों में प्रकटीभूत वेदों ने करोड़ों वर्ष तक अर्थ व प्रयोग सहित समस्त प्राणियों का उपकार किया, किन्तु समय के थपेड़ों ने वर्तमान में उन सर्वहितसाधिका श्रुतियों को कोरी श्रद्धा तक परिमित कर दिया है।

सामान्यतया ऐसा होता है कि जिस विधा की जन व्यवहार में अधिक काल तक उपेक्षा होगी वह अनुपयोगी आभासित होने लगती है, भले ही वह सर्वथा पूर्ण तथा अधिकतम कल्याणकारिणी क्यों न हो।

ऐसे में आवश्यकता हुई वेद को विश्व के उन निष्पक्ष, ज्ञानपिपासु, कर्त्तव्यनिष्ठ वैज्ञानिकों तथा बुद्धिजीवियों में प्रवेश कराने की, जिनमें सारा मानव समुदाय विश्वास करता हो। इस आधारभूत एवं अद्वितीय कार्य को पूर्ण करने के लिए कृतसंकल्प हुए आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक जी। जिन्होंने समाज की अंधेरी गली से निकल कर, प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के समकक्ष खड़े होकर तमसावृत्त विश्ववीथिका में प्रदीप्त मशाल लेकर दौड़ लगानी चाही है, जिससे समस्त भूमण्डल प्रकाशित हो सके।

मुझे आशा है आप सभी इस अद्भुत कार्य के लिए प्रतीक्षारत् एवं सहयोगरत् रहेंगे।

आपका,
मोक्षराज
(अजमेर)

॥ ओ३म् ॥

—: प्रार्थना :—

हे प्रभो देना सहारा, पार नैया कीजिए।
लक्ष्य हित बढ़ता रहूँ मैं, शक्ति बुद्धि दीजिए ।।

वेद की संस्थापना हो, विश्व भर में हे प्रभो।
इसका ही विज्ञान जागे, इच्छा है मेरे विभो।
इसलिए जीवन मरण हो, भावना यह दीजिए।। 1।। हे प्रभो...

वेद तेरा ज्ञान है, सुनता रहा हूँ लोक में।
तुझको ऋषि मुनियों ने ध्याया, इसके ही आलोक में।
आज शंका विघ्न आये दूर इनको कीजिए।। 2।। हे प्रभो...

संशयों में जीना मुझको, ना कभी स्वीकार्य है।
(हो निरुत्तर बैठ रहना, नाम मुझे स्वीकार्य है)
सत्य की रक्षा ही करना, मेरा पावन कार्य है।
कार्य सिद्धि कर सकूँ, वरदान ऐसा दीजिए।। 3।। हे प्रभो...

मन की चंचलता हरो, यह दुःख मुझको दे रहा।
(मन की दुर्बलता हरो, यह कष्ट मुझको दे रहा)
सत्य पथ पर ही बढ़े जो, आज विचलित हो रहा।
एक मन बनकर बढ़ूँ मैं, नाथ करुणा कीजिए ।। 4 ।। हे प्रभो...

लक्ष्य लीन्हा है कठिन अब, लाज तेरे हाथ में।
पाके इसको ही रहूँ, विनती करुँ हे मात मैं।
अग्नि सम जलता रहूँ मैं, प्रेरणा भर दीजिए।। 5 ।। हे प्रभो...

यदि रहूँ जीवित जगत में, तेरे चरणों में रहूँ।
सत् गहूँ त्यागूँ असत् को, अन्यथा तन छोड़ दूँ।
आ गया तेरी शरण मैं, याचना सुन लीजिए। ।। 6 ।। हे प्रभो...

रचयिता – आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

।। ओ३म् ।।

नमो ब्रह्मणे देवेभ्यश्च पूर्वजेभ्यः

—: संस्कृत गीतिका :—

ओ३म् परमेशदेवेश, सर्व—रक्षक पाहि नः ।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः ।। 1 ।।

सृष्ट्यादेरग्नि—वायू च, अंगिरादीनृषीन् तथा ।
तेभ्यः प्राधीत—वेदञ्च, ब्रह्माणञ्च प्रजापतिम् ।। 2 ।।

स्वायम्भुवं दयावन्तं, मनुं प्राज्ञं महोदयम् ।
निर्ममे विधिशास्त्रं यः, सर्वलोकहिताय च ।।3 ।।

आर्यावर्तस्यदेशस्य, इक्ष्वाकुं चादि भूपतिम् ।
विष्णुं शिवमहादेवं, इन्द्रदेव—बृहस्पती ।। 4 ।।

मार्कण्डेयं भृगुं यास्कं, चापि वेद —प्रवाचकान् ।
सनत्कुमारमात्मज्ञं, सर्वान् शौर्यशिरोमणीन् ।। 5 ।।

मान्धातारमगस्त्यञ्च, अत्रिनारदधीवरान् ।
वेद वेदांग—तत्वज्ञं, श्रीरामं सह सीतया ।। 6 ।।

भरत सौमित्राञ्चापि, हनुमन्तं यशस्विनम् ।
विश्वामित्रं वशिष्ठं च, भरद्वाज—महामुनिम् ।। 7 ।।

वाल्मीकि—याज्ञवल्क्यौ च, विदेहाश्वपती तथा ।
गार्गी घोषां अपालां च, लोपामुद्रां पृथामपि ।। 8 ।।

प्रख्यापितो महानार्या — वर्त्तो देशस्त्वयं पुरा ।
भरतं पृथिवीपालं यन्नाम्ना भारतोऽभवत् ।। 9 ।।

पाणिनिं शब्दशास्त्रज्ञं, व्यासं देवं पतञ्जलिम् ।
गौतम–कपिलाचार्यौ, कणादर्षिं च जैमिनीम् ।। 10 ।।

योगेशं भगवत्कृष्णं महाप्राज्ञं महाप्रभुम् ।
अष्टाशीति–सहस्राणि ऋषीन् वा उर्ध्वरेतसः ।। 11 ।।

गांगेय–भीष्म कौन्तेयान्, कौटिल्यं गुप्त–भूपतिम् ।
देशभक्त–सुवीराणाम्, मातृणां चापि वीरताम् ।। 12 ।।

आद्यं च शंकराचार्यं, आर्य–भट्टं तथैव च ।
भास्कर–ब्रह्मगुप्तौ च, विरजानन्द–दण्डिनम् ।। 13 ।।

सुवेदोद्धारकाचार्य–दयानन्द–सरस्वतीम् ।
आइंस्टीन–सुविज्ञानं, न्यूटन–बोस–शेखरान् ।। 14 ।।

अन्ये ये निरता ज्ञाने, एतान् सर्वान् महामतीन् ।
आर्याः कर्मगुणाभ्यां ये, प्राणिकल्याणसाधकाः ।। 15 ।।

तान् महापुरुषान् सर्वान्, सर्वदेश–निवासिनः ।
सर्वान् एतान् महाभागान्, स्मराम सततं वयम् ।। 16 ।।

एतेषामेव पन्थानं, संचलेम सदा प्रभो ।
सुबुद्धिं देहि शक्तिं च, याचेम त्वां कृपानिधे ।। 17 ।।

सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु, सन्तु सर्वे निरामयाः ।
सर्वे पश्यन्तु भद्राणि, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ।। 18 ।।

— XXX —

रचयिता – आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

संशोधक – विद्यामार्तण्ड आचार्य डा. विशुद्धानन्द मिश्र(बदायूँ)

"ओ३म्"

सम्पादकीय

सम्मान्य पाठक वृन्द ! **"ओ३म् अग्नेव्रत पते व्रतं चरिष्यामि।"** की भावना को लेकर संकल्पवान् हुए अनेक महापुरुषों की चर्चा आप लोगों ने इतिहास में सुनी व पढ़ी होंगी उनमें कुछ संकल्प अपने हित के लिए लेते हैं। परन्तु कुछ महापुरुष ऐसे होते हैं जो समाज राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण विश्व मानवता के हित के लिए संकल्प लेते हैं। इनमें भी कुछ का संकल्प अति-भीषण होता है, इसी प्रकार का एक भीषण संकल्प आप इस पुस्तिका में पढेंगे। जिसको पढ़ने के पश्चात् आपको ज्ञात होगा कि वास्तव में यह संकल्प अभूतपूर्व-अश्रुतपूर्व, भीषणतम एवं अति महत्त्वपूर्ण है साथ ही यह भी अनुभव होगा कि यह काम तो पहले से ही किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति के द्वारा होना चाहिये था परन्तु ऐसा नहीं हुआ और फिर आपके आत्म निरीक्षण करने के पश्चात् अनुभव होगा कि हम कहाँ और कितने पीछे हैं, कितना कुछ खो चुके हैं और कितने गलत हैं? हमारा दायित्व व कर्त्तव्य क्या है? उसका हम कितना निर्वहन कर पा रहे हैं। यह सम्पूर्ण समाज ही ऋषियों तथा देवों का ऋणी है। अगर हम ऐसे ही सोते रहे तो आज हम आर्यों (कथित हिन्दू रूप) के अलावा कौन ऋषियों के ऋण से उऋण होने के लिए वेदादि सद्ग्रन्थों की रक्षा का कार्य करेगा। हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ माने जाने वाले ग्रन्थ वेदादि की अस्मिता को कौन बचाएगा? वस्तुतः वेद हिन्दू ही का नहीं वरन् मानव मात्र का धर्म व विद्या का ग्रन्थ है। आज विज्ञान की चुनौती हमारे लिए सबसे कठिन है विज्ञान की चकाचौंध में जीने वाले लोग ईश्वर को ही नहीं मानते उन पर इक्कीसवीं सदी का भूत सवार है। फिर वेदादि ग्रन्थों को कैसे और क्यों मानेंगे? देश में दिन पर दिन विकास के नाम पर पापाचार, अनाचार एवं नग्नता बढ़ती जा रही है, इसका कारण धर्म के सही रूप को न जानना ही है। क्योंकि धर्म के मूल

श्रोत वेद को ही भूल चुके हैं। ऐसे समय में पूज्य, सत्यनिष्ठ, महाव्रती, समाजसेवी, वैज्ञानिक बुद्धि आचार्य श्री अग्निव्रत नैष्ठिक जी ने विश्व के विकसित देशों के वैज्ञानिकों के समक्ष वेदादि ग्रन्थों की प्रामाणिकता तथा अपौरुषेयता को 12 वर्षों की अल्पावधि में सिद्ध करने का महाव्रत लिया है। आपको यह जानकर महदाश्चर्य भी होगा या फिर आप इसे प्रसिद्धि व धनार्जन का एक नया ढंग भी कह सकते हैं। क्योंकि आज प्रायः इसी के लिए क्या-क्या मिथ्या प्रचारित नही होता सर्वत्र छल-कपट का ही साम्राज्य व्याप्त है। परन्तु पुस्तक को हृदय की गहराइयों तथा मस्तिष्क की ऊँचाइयों से पढ़ने के पश्चात् आपका यह भ्रम सर्वथा उसी प्रकार नष्ट हो जायेगा जिस प्रकार सूर्य के उदय होते ही निशा का कहीं निशान नहीं रहता। यह उदीयमान सूर्य अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। आचार्य जी द्वारा यह व्रत किसी के कहने से या किसी को बताकर के नहीं लिया गया बल्कि ऋषि बोध पर्व पर दि. 26 फरवरी 2006 को देवयज्ञ के पश्चात् यह व्रत लिया तथा हम सब को अपने व्रत से अवगत कराया। यह व्रत न्यासियों या न्यास के संरक्षकों के सम्मुख ही नहीं बल्कि फरीदाबाद में हजारों की संख्या में उपस्थित प्रबुद्ध जनों-आर्य्यों के सम्मुख इस महाव्रत को दुहराया था। श्री आचार्य जी के बदायूँ प्रवास पर राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित विद्वत् शिरोमणि पूज्यपाद आचार्य श्री विशुद्धानन्द मिश्र जी (वेदार्थ कल्पद्रुम जैसे महाग्रन्थ के प्रणेता) ने भी इस व्रत को सुनकर आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि यह एक अद्भुत तथा विशेषावश्यक कार्य है। आप भारत के प्रथम ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने इस महान कार्य को अपना लक्ष्य बनाया और वेदों की प्रमाणिकता सिद्ध हो जाने पर विश्व के प्रथम व्यक्ति होंगे। मैं श्री आचार्य जी के साथ बदायूँ गया था।

मैं इस कार्य से प्रभावित होकर व्याकरण से आचार्य एवं शिक्षा शास्त्री करने के पश्चात् सितम्बर 2005 से महान् कार्य में शामिल होकर आचार्य जी के पास रहकर इस महत्त्वपूर्ण विषय का अध्ययन करने एवं

सहयोग करने हेतु उपस्थित हुआ हूँ। तभी से इनके समीप रहकर मैंने इन्हें देखा जाना एवं समझा, लोगों द्वारा जो इनसे वर्षों से परिचित हैं उनसे भी सुना व जाना कि ये उपहास में भी मिथ्या कथन प्रायः नहीं करते अगर कहीं कुछ कह दिया तो उसे पूर्ण अवश्य करते हैं। ऐसे में हम सभी वेदानुरागियों अर्थात् निष्पक्ष सत्योपासकों का परम कर्त्तव्य तथा दायित्व बनता है कि ऐसे प्रखर बुद्धि सम्पन्न सत्यव्रती आचार्य श्री के जीवन को रक्षित करें अन्यथा यह भी अटल सत्य है कि 12 वर्षों के पश्चात् यदि वे लक्ष्य पूर्ण न कर सके तो उन्हें देह नष्ट करने से कोई रोक न सकेगा। यूँ तो लोगों ने बहुत प्रतिज्ञायें की हैं परन्तु समाजोपकारक ऐसी अद्भुत प्रतिज्ञा किसी ने ली हो ऐसा धरातल पर मुझे कोई दिखाई नहीं देता। वेदों में किसी एक वैज्ञानिक-आविष्कार या सिद्धान्त को लेकर कोई भी शोध कर सकता है। परन्तु सम्पूर्ण विज्ञान को ही चुनौती मानकर संसार के विकसित देशों के प्रबुद्ध वैज्ञानिकों में वेद की प्रामाणिकता, ईश्वरीयता तथा सम्पूर्ण विज्ञान का मूल ग्रन्थ सिद्ध करना अपने आप में दुरूह तथा अद्भुत कार्य है।

यद्यपि लक्ष्य प्राप्ति न होने पर संसार त्याग के संकल्प के औचित्य पर प्रायः अधिकांश हितैषी महानुभाव प्रश्न चिह्न लगायेंगे और हमारे सभी न्यासी भी ऐसा सोचकर दुःखी व चिन्तित हैं। परन्तु श्री आचार्य जी को पूर्ण आत्मविश्वास व ईश्वर पर विश्वास है कि लक्ष्य अवश्य ही प्राप्त होगा। फिर जब इन्होंने व्रत ले ही लिया तो अब इनके सत्यनिष्ठ स्वभाव व वैचारिक दृढ़ता को विचार कर यही कहा जा सकता है कि हमें केवल सहयोग करने-कराने पर ही ध्यान देना चाहिए तथा औचित्य-अनौचित्य पर बहस से बचकर ईश्वरीय व्यवस्था को स्वीकार करना चाहिए। इसलिए हम आप सभी सनातनी वैदिक धर्मी तथा सम्पूर्ण विश्व मानवतावादियों को चाहिए कि साधनों के अभाव में यह महान् कार्य रुक न जाये अन्यथा ऋषि दयानन्द के परम भक्त एवं वेदोपासक उदित सूर्य के अस्त होने पर

पता नहीं ऐसी अद्‌भुत प्रतिज्ञा लेने वाला कोई इस धरातल पर आये वा नहीं।

मान्यवर! आप सोचेंगे कि यह कार्य असम्भव प्रतीत होता है। शेखचिल्ली कल्पना है। भला इतने विकसित विज्ञान से कौन सामना कर सकता है? अनेक वैदिक विद्वान पहले से ही कार्य कर रहे हैं।

परन्तु हमें ईश्वर पर तथा आचार्य श्री की प्रखर मेधा बुद्धि पर पूर्ण विश्वास है कि यह कार्य अवश्य पूर्ण होगा। अनेक कार्यों में उलझे स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक बाधाओं से लड़ते मात्र 1-2 मास के प्रयास से आचार्य जी ने जिस पुस्तक को लिखा और विश्व मंच पर भी अवैदिक मान्यताओं को केवल आपने ही चुनौती दी। भाभा परमाणु केन्द्र जैसे संस्थान के वैज्ञानिकों के घर जाकर अपनी प्रामाणिकता सिद्ध करना और विश्व स्तरीय वैज्ञानिक द्वारा पूज्य आचार्य जी की प्रतिभा पर आश्चर्य व्यक्त करते हुए प्रथम परिचय में ही प्रभावित हो जाना, क्या अपने में अद्‌भुत घटना नहीं है। क्या ऐसा कोई और उदाहरण है। केवल इसी कार्य में 10-12 वर्ष जुटे रहे तो फिर कार्य का स्तर क्या होगा। यह आप अनुमान लगा सकते हैं।

हमें आप सभी वेदभक्त तथा सत्यान्वेषक महानुभावों से आशा है कि आप सबका सहयोग मन व धन दोनों रूप से प्राप्त होता रहेगा।

अमित शास्त्री
उपाचार्य, वेद विज्ञान मंदिर
भागल-भीम, भीनमान

दिनांक : २२-०५-२००६
तिथि : १० कृ. प. ज्येष्ठ २०६३

।। ओ३म् ।।

सत्य धर्म तथा कल्याणकारी विज्ञान की ओर

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

19 जनवरी, 2006

मेरे आदरणीय मित्र महानुभाव ! यह स्वभाव प्रत्येक प्राणी का होता है कि वह दुःख से बचना तथा सुख को पाना चाहता है। फिर भला सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट प्राणी मनुष्य क्यों नहीं सुख प्राप्ति हेतु पूर्ण पुरुषार्थ करेगा ? आज संसार भर के प्रबुद्ध मनुष्य चाहे वे किसी भी उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर आसीन हों, संसार को सुखी बनाने का यत्न अपने–अपने ढंग से कर रहे हैं। संसार के संविधान, धर्माचार्य, सामाजिक संस्थाएँ, विकसित होता विज्ञान, अर्थशास्त्री, शिक्षा–नीतियां आदि सभी इसके लिए प्रयत्नशील हैं कि मनुष्य सुखी होवे परन्तु इसके उपरान्त भी आज संपूर्ण विश्व अशांति, आतंक, हिंसा, घृणा, मिथ्या, छल–कपट, ईर्ष्या, राग, द्वेष से ग्रस्त होकर अतिदुःखी व अशांत है। धनी, निर्धन, बली–निर्बल या विद्वान्, मूर्ख सभी अशांत हैं। तब विचार होता है कि क्या कारण है कि चिकित्सा करते रहने पर भी रोग बढ़ता ही जा रहा है। मेरा मानना है कि इस सब का मूल कारण सत्य और वास्तविकता से अनभिज्ञ रहना अथवा जानकर भी उसके अनुकूल व्यवहार न करना ही है। आज सारे संसार में विकास की प्रतिस्पर्धा हो रही है। हम दूसरे को छल से गिराकर उससे आगे जाना चाहते हैं। दूसरे की झोपड़ियाँ जलाकर अपने भवन बनाना चाहते हैं, दूसरे की थाली से सूखी रोटियां भी छीन कर स्वयं सुस्वादु सरस भोजन करना चाहते हैं, दूसरों के तन के वस्त्र खींचकर स्वयं बहुमूल्य वस्त्र पहनकर फैशन करना चाहते हैं, तथा दूसरों का गला घोंटकर स्वयं एकाकी अमर जीवन जीना चाहते हैं। क्या ऐसा विकास हमारी शांति का

विनाशक नहीं है ? मानवीय–आत्मा का हनन करने वाला नहीं है ? हमें विचारना होगा कि विज्ञान ने हमें अनेकों सुख सुविधाऐं प्रदान कीं परन्तु क्या हम सुखी व सन्तुष्ट हुए ? क्या दया, करुणा, मैत्रीभाव, भाईचारा, ईमानदारी, सच्चाई, जैसे मानवीय मूल्यों को यह अंधाधुंध विकास की आंधी ने नष्ट–भ्रष्ट नहीं कर दिया है ? जिस मनुष्य के लिए इन संसाधनों का विकास हो रहा है, वह मनुष्य अन्तःकरण एवं आत्मा से कितना विकसित हुआ है ? उसका हृदय कितना विशाल व उदात्त हुआ है ? उसका मस्तिष्क कितना सत्यासत्य विवेकी व न्यायप्रिय हुआ है क्या आज किसी को यह सोचने का समय वा इच्छा है ? परंतु मेरे प्यारे मित्रो! जरा विचारिए! इसका दोष विज्ञान को तो नहीं दिया जा सकता। विज्ञान तो साधन है, साधन स्वयं में अच्छा या बुरा नहीं होता, बल्कि उसके उपयोगकर्ता पर निर्भर है कि साधन से अच्छा कार्य करे वा बुरा उपयोगकर्ता की मनोवृतियां ही अच्छे व बुरे के लिए उत्तरादायी हैं। अब प्रश्न उठता है कि मनुष्य की पतनोन्मुखी मनोवृतियों का परिष्कार कौन करे ? तब हमारा ध्यान सहसा ही धर्म की ओर जाता है परंतु आज संसार में देखें तो अनेक परस्पर विरुद्ध विचार वाले मत मतान्तर धर्म का रूप धारण करके मानव को सुधारने का प्रयत्न करते दिखाई दे रहे हैं और वास्तविकता यह है कि मानव इनमें फँसकर अंधविश्वास, रूढ़िवाद, अविद्या, दुराग्रह, पारस्परिक घृणा, हिंसा की ओर बढ़ता रहा है एवं बढ़ रहा है। धर्म के नाम पर जितना रक्तपात व वैमनस्य संसार में सदियों से होता आया है सम्भवतः उतना किसी अन्य कारण से नहीं हुआ हो। मैं जब इस पर विचारता हूँ तो प्रतीत होता है कि केवल विश्वास के आधार पर टिके मत–मतान्तरों का होना ही मानव जाति के लिए घातक है। इस अनिष्ट फल से बचने के लिए धर्म (जो केवल एक ही हो सकता हैं जबकि मत–पंथ अनेक हो सकते हैं) को सच्चे स्वरूप में समझना होगा। ऐसा तब

हो सकेगा जब इसे विज्ञान के साथ पूर्णतः जोड़ दिया जायेगा। तब धर्म पर आस्था रखने वाले उसी प्रकार एकमत हो सकेंगे, जिस प्रकार भौतिकी, रसायन–विज्ञान, गणित, खगोलिकी, जीव–विज्ञान, कृषि विज्ञान, आयुर्विज्ञान आदि विषयों में संसार के सभी मनुष्य एक मत हैं। इन भौतिक विद्याओं के कारण संसार में न कभी अलगाववाद पनपा और न रक्तपात ही हुआ। मुझे आश्चर्य व दुःख है कि दुःखनाशक व सुखमूलक धर्म के नाम पर यह पाप क्यों ? आध्यात्मिकता के नाम पर ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा क्यों ? मेरे जागरुक मित्रो ! हमें धर्म का एक ऐसा सच्चा स्वरूप संसार के सम्मुख लाने का प्रयास करना होगा, जिसमें पाखण्ड, अंधविश्वास, अवैज्ञानिकता, पूर्वाग्रह, रूढ़िवाद, अमानवीयता, पक्षपात व असत्य का कोई स्थान नहीं हो। जो देश, काल व परिस्थितियों की सीमाओं से परे शाश्वत व सार्वदेशिक हो। जो मानव ही नहीं अपितु प्राणिमात्र के लिए सदैव हितकर हो। यही विचार संसार के आदि ऋषि ब्रह्मा से लेकर ऋषि दयानन्द पर्यन्त का रहा है। धर्म के नाम पर अलगाववाद का पाठ पढ़ाने वाले, सत्य–तर्क–विज्ञान के नाम से भयभीत होकर दूर भागने वाले धर्मप्रचारकों, आचार्यों, साधु–संतों, पंडितों, मौलवियों, पादरियों, ग्रंथियों आदि सभी मान्य महानुभावों को अपने–अपने हठ, दुराग्रह, पूर्वाग्रह, पद–प्रतिष्ठा धन की लालसा को त्याग कर विज्ञान–बुद्धि से सोचने का साहस जुटाना होगा। उन सभी महानुभावों को विचारना होगा कि जब हम परमात्मा के बनाये भौतिक नियम विज्ञानादि पर एकमत हो सकते हैं। इन विषयों को साथ–साथ मिल बैठकर पढ़–पढ़ा सकते हैं और ऐसा करते हुए भौतिक उन्नति कर सकते हैं, तब इसी भाँति परमात्मा के ही बनाये आध्यात्मिक नियमों में परस्पर भेद क्यों स्वीकार करते व बढ़ाते हैं ? आज नये–नये मत जन्म लेकर अपने को सच्चा धर्म बताने का दावा कर रहे हैं, तो आमजन जिसका धर्म विषयक विशेष अध्ययन व चिन्तन नहीं होता,

भय या लोभ के वशीभूत अथवा भीड़ को देखकर मत–पंथों के दलदल में फँस जाता है। कोई यह विचारने का यत्न नहीं करता कि सत्य का आधार न तो भारी भीड़ होती है, और न ही लोभ या भय से उत्पन्न कोई फलाकांक्षा की पूर्ति हो जाना। सत्य का निर्णय वैज्ञानिक बुद्धिजन्य तर्क, प्रमाण व तथ्यों के आधार पर तथा गहन, मनन, चिन्तन व निर्मल निष्पक्ष निःस्वार्थ हृदय से ही हो सकता है जो आज दुर्लभप्रायः हो गया है। हम यह भी विचारने का प्रयत्न नहीं करते कि हम धर्माचार्य सत्य, न्याय, निःस्वार्थ, निष्कपटता की बात करते अवश्य हैं, परंतु अपने–अपने मत की न्यूनताओं को जानते हुए भी दुराग्रही बने रहते हैं तथा अपने मत के दोष बतलाने वाले के प्राण घातक भी बन बैठते हैं। तब सत्य ग्रहण की तो बात ही क्या कहें ? उधर जो वैज्ञानिक सत्य, न्याय, पक्षपातरहितता, अध्यात्म, निर्मलता, नैतिकता की लेशमात्र भी चर्चा नहीं करते, वे सत्य के ग्रहण तथा असत्य के परित्याग के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। कोई वैज्ञानिक जिसे धर्माचार्य नास्तिक भले ही कह दें, अपने जीवन भर के पुरुषार्थ से खोजे गये किसी सिद्धान्त को किसी अन्य वैज्ञानिक द्वारा असिद्ध होते जान लेता है, तब वह तत्काल अपनी भूल को स्वीकार कर नवीन सिद्धान्त को अपना लेता है, अहा! कैसा अनूठा आदर्श वे हम धर्माचार्य कहाने वालों के लिए प्रस्तुत करते हैं। ऐसे धर्म को धिक्कार है जो हमें सत्य की ओर जाने से रोके। क्या हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हमें सत्यासत्य विवेक के क्षेत्र में सबसे अधिक उदार व विशाल हृदय होना चाहिए क्योंकि सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं होता। मैं विचारता हूँ कि जिस दिन विश्व भर के धर्माचार्य पूर्ण निष्पक्ष होकर सत्य का ग्रहण व असत्य का परित्याग करने का सत्साहस करेगें उस दिन संपूर्ण भूमण्डल पर एक सत्य–धर्म का शासन होगा, एक ईश्वर की पूजा होगी। साम्प्रदायिक हिंसा, वर्गसंघर्ष, देशसंघर्ष आदि समाप्त होकर सारा विश्व परमपिता परमात्मा का एक

परिवार बनने की दिशा में अग्रसर होगा परन्तु इसके लिए दूसरी ओर हमारे आधुनिक वैज्ञानिकों को भी यह सोचना होगा कि विज्ञान को तकनीक से कहाँ तक जोड़ना उचित व आवश्यक है, जिससे मानव व्यर्थ की स्पर्धा में फँसकर सर्वविध असंतोष में जलता हुआ चिन्ता अवसाद ईर्ष्या–द्वेष से ग्रसित होकर दुःखों से पीड़ित न होता रहे। पर्यावरण नष्ट भ्रष्ट होकर जीवों की प्रजातियां तक लुप्त न होती रहें। नये–नये रोग, जल, वायु का संकट न बढ़ता रहे। और इन सबके कारण संसार में भयंकर असंतोष, संघर्ष, कृत्रिम अभाव, आतंकवाद का जन्म न होता रहे। इस हेतु विज्ञान को भी सत्य धर्म से जुड़ना होगा।ऐसा करने से विज्ञान उपर्युक्त समस्याओं का जनक नहीं बनकर धर्म के साथ मिलकर मानवीय मूल्यों का सरंक्षक बनेगा। पर्यावरण शुद्ध व सुरक्षित रहेगा। इसके लिए वैज्ञानिकों, समाज शास्त्रियों, साम्यवादियों अर्थचिन्तकों व राजनैतिकों को अपना दृष्टिकोण बदलने का साहस करना होगा। धर्म को नशा न मानकर सत्याचरण पर आधारित मानवीय मूल्यों का सरंक्षक मानना होगा। धर्म को विश्वास की कल्पित वस्तु मानने के स्थान पर वैज्ञानिक सत्य पर सिद्ध मानना होगा। जिस दिन विज्ञान ऐसे सत्य धर्म को साथ लेकर अनुसंधान करेगा तब सारा विश्व भोगवाद की स्पर्धा को विकास नाम से सम्बोधित नहीं करके त्यागवाद में संतुष्ट रहकर आवश्यक, उपयोगी, तथा निरापद आविष्कार ही करेगा। इससे न तो प्राकृतिक संसाधनों की न्यूनता होगी और न ही कृत्रिम अभाव एवं सामाजिक असमानताजन्य, अशांति व असन्तोष पनपेगा।

इसी प्रकार के सुखद समाज को बनाने की भावना ऋषियों की सदैव से रही है। ऋषि दयानन्द जी तो परमाणु से लेकर परमेश्वर तक का यथार्थ ज्ञान व उससे अपना व दूसरों का उपकार करना ही विद्वानों

का कर्तव्य बताते हैं। पूर्वकालीन ऋषि, देवगणों में ब्रह्मा, मनु, भृगु, नारद, सनत्कुमार, मार्कण्डेय अगस्त्य, भरद्वाज, अत्रि, यास्क, गौतम, कणाद, कपिल, व्यास, पतंजलि, याज्ञवल्क्य, बृहस्पति, महादेव–शिव, विष्णु, राम, कृष्ण आदि हजारों महापुरुषों तथा मध्यकालीनों में आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त आदि की दृष्टि में सत्य धर्म तथा सच्चे विज्ञान का ऐसा ही आदर्श था जिस कारण तत्कालीन संसार में सुख–शांति का साम्राज्य था। उधर महान् विदेशी वैज्ञानिकों में सर अल्बर्ट आइंस्टाइन, सर आलीवर जोसेफ लॉज, प्रो. जॉन एम्बोज फ्लेमिंग, प्रो. एडवर्ड हल जान एलन हार्कर प्रो. सिलवेनिस फिलिप्स आदि अनेक वैज्ञानिक विज्ञान व अध्यात्म के प्रबल समर्थक थे। मैं जब–जब सर आइंस्टाइन के बारे में सुनता व जानता हूँ तब–तब मेरा मस्तक उस महान व्यक्ति के सम्मुख श्रद्धा से झुक जाता है।

आज हमारे सम्मुख चुनौतीपूर्ण प्रश्न यह है कि आज जब विज्ञान व आध्यात्म दोनों अति दूर खड़े दिखाई दे रहे हैं, तब कैसे इन्हें साथ–साथ लाया जाये ? मेरे मस्तिष्क व आत्मा ने विचारा कि क्यों न अपना जीवन इसी महान् मानवीय कार्य के लिए समर्पित किया जाये ? सत्य, वेद, धर्म के संस्कार आर्य परिवार के वातावरण से मिले। मेरे आदर्श स्वरूप ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों से पोषण मिला। इस समय कुछ वैज्ञानिकों व वैदिक विद्वानों का सद्भाव व सहयोग मिल रहा है। मैं आशा करता हूँ कि विश्व के अन्य प्रसिद्ध वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, धर्माचार्यों व युवकों का भी ऐसा ही भाव मेरे प्रति बनेगा।

मेरे मित्र महानुभावो। मैनें अब तक तो वेद धर्म को सत्य धर्म की सभी शर्तों पर स्वबुद्धि के अनुसार यथार्थ पाया है। इस कारण मैंने विचार किया है कि वैदिक वाङ्मय से विज्ञान के गूढ़ रहस्यों को खोजकर

आधुनिक वैज्ञानिकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाये, वे उस पर प्रयोगशालाओं में अनुसंधान करें तो उन्हें जहाँ समय की बचत होगी वहीं उन्हें अनुसंधान हेतु नये–नये क्षेत्र प्राप्त हो सकेंगे। इस के साथ ही वैदिक विज्ञान की प्रामाणिकता भी उनकी दृष्टि में बढ़ेगी। इससे उसकी श्रद्धा वेद की अन्य विद्याओं (यथा अध्यात्म, सामाजिक, राजनैतिक सिद्धान्त, अर्थशास्त्र) पर भी होगी। प्रबुद्ध जनों को इस बात का भी अनुभव होगा कि वेद वा वैदिक साहित्य किसी देश या वर्ग के लिए ही नहीं अपितु विज्ञानादि की भाँति समस्त सृष्टि के लिए हितकारी हैं। संसार को धीरे–धीरे इस बात का भी ज्ञान होगा कि वेद किसी देश वा वर्ग विशेष की संपदा नहीं बल्कि सभी मानवों की सम्पत्ति है। वेद उस काल का है, जब हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी, ताओ, यहूदी, साम्यवादी, नास्तिक आदि वर्ग बने भी नहीं थे। तब समस्त भूमण्डल पर सभी केवल मानव ही कहलाते थे। उस समय देशों का प्रादुर्भाव भी वर्तमान रूप में नहीं हुआ था। यह वेद ही समस्त ज्ञान–विज्ञान का मूल है, ऐसा जिस दिन सिद्ध हो जायेगा तो मुझे कोई कारण प्रतीत नहीं होता कि कोई प्रबुद्ध मानव इसे स्वीकार न करे। मेरे बन्धुवर। जिस बात को मैं, यहां कह रहा हूँ उसे सिद्ध करना ही मेरे जीवन का लक्ष्य है। मेरा जीवन विश्वभर के प्राणिमात्र के समग्रहित चिन्तन के लिए है, न कि किसी मत पंथ का प्रचार करना मेरा प्रयोजन है। इसके लिए मैं, धर्म व विज्ञान दोनों को परस्पर मिलाने के प्रयत्न का व्रती हूँ। विज्ञान से तात्पर्य सर्वत्र तकनीकी ज्ञान भी मैं ग्रहण नहीं करता। मैं समझता हूँ कि बेरोक व अनावश्यक तकनीक मानव को आलसी, भोगवादी गलाकाट–प्रतिस्पर्धी, अशांत व संघर्ष प्रिय बनाती है। मेरा ध्येय सृष्टि के गंभीर व सूक्ष्म रहस्यों को जानकर महती चेतना परमात्मा की ओर विज्ञान को उन्मुख करना है। इससे मानव में आस्तिकता, दयाभाव, प्रेम, न्याय, सत्य, आदि गुणों का उदय होगा। वह निरंकुश व स्वेच्छाचारी

नहीं बनकर परमात्मा के अधीन चलेगा। इसी क्रम में परमाणु–नाभिकीय–कण–ब्रह्माण्ड भौतिकी के गूढ़ तत्वों को वैदिक वाङ्मय से खोजना साथ–साथ आधुनिक विज्ञान की अवधारणाओं को समझना मेरी रुचि के विषय हैं। मेरी दृष्टि में उपर्युक्त विषय विज्ञान के सूक्ष्मतम विषय हैं, अन्य सभी विज्ञान इनसे किसी न किसी प्रकार जुड़े हुए हैं। मेरा मानना है कि उपर्युक्त विषयों में आधुनिक विज्ञान, वैदिक विज्ञान से कुछ नयी दिशा प्राप्त कर सकता है। ऊर्जा व द्रव्यमान के रहस्यों को समझना भी इसी क्षेत्र का विषय होगा। इसके आगे अनेक उपयोगी तकनीकी विषय भी अनायास ही प्राप्त हो सकेंगे, ऐसी मैं सम्भावना करता हूँ। आधुनिक विज्ञान उपर्युक्त विषयों में क्या–क्या भूल कर रहा है ? तथा वर्तमान व मध्यकालीन वैदिकों ने क्या–क्या भूलें वैदिक ज्ञान को समझने में की हैं, या कर रहे हैं, इसका भी कुछ–कुछ अनुमान मेरे मस्तिष्क मैं हो रहा है व होता भी जायेगा ऐसा विश्वास है। मुझे इस दिशा में कार्य करते लगभग एक वर्ष ही व्यतीत हुआ है। सृष्टि के मूल कारण विषय पर अल्पचिन्तन से एक पुस्तक प्रकाशित की है। जो इस वेबसाइट पर आप देख सकते हैं। पुस्तक अतिसंक्षेप में है। उस विषय पर अभी बहुत आगे बढ़ने का प्रयत्न करना है। उपर्युक्त सभी विषयों के गूढ़ चिन्तन को आगे बढ़ाते हुये एक विशाल ग्रन्थ के रूप में इसे लाकर संपूर्ण सृष्टि प्रक्रिया तक आना है, निश्चित ही तब उपर्युक्त सभी विषयों के साथ मौसम विज्ञान पर्यावरणादि विषयों में एक क्रान्तिकारी आयाम जुड़ेगा ऐसा मेरा प्रभु कृपा से विश्वास है। हां कभी–कभी सर्वथा साधनहीनता के कारण निराशा होती है। मेरा विचार है, कि यदि पूर्ण निश्चिन्तता पूर्वक 10–15 वर्ष स्वस्थ रहते हुए इसी दिशा में प्रयत्नशील रहा, साधन, सहयोग, मिलते रहे तो कुछ विशेष कर पाऊंगा। परन्तु मैं आप सबके सम्मुख यह वचन तो नहीं दे सकता कि ऐसा मैं अवश्य ही कर सकूँगा परन्तु यह अवश्य कह सकता हूँ कि पूर्ण

ईमानदारी व निष्ठा से सामर्थ्यानुसार प्रयत्न करूंगा तथा जो भी सत्य सिद्ध होगा उसे अवश्यमेव स्वीकार करूँगा।

प्यारे भाइयों ? मेरे हृदय में तीव्र इच्छा सदैव यह भी रहती है, कि संसार का प्रत्येक मानव सत्य का प्रबल पक्षधर व अन्वेषक बने। यदि ऐसा न कर सके तो अन्वेषण में स्वसामर्थ्यानुसार सहयोग तो करे ही। यदि सहयोगी भी नहीं बन सके तो कम से कम किसी पूर्वाग्रह, दुराग्रह, पद–प्रतिष्ठा धन की लालसा में अथवा अनेकता में एकता की भ्रान्त धारणा, कल्पित भ्रान्त मानवता, मिथ्याधारित राष्ट्रियता, मिथ्या सैक्यूलरिज्म के वशीभूत होकर सत्य का विरोधी तो नहीं बने। प्रत्येक मानव को यह बात हृदय की गहराइयों तथा मस्तिष्क के चिन्तन की ऊंचाइयों से विचारनी चाहिए कि सत्य धर्म तथा विज्ञान दोनों की ही कोई भौगोलिक सीमा नहीं होती। तब नस्ल, भाषा, वर्ग, सम्प्रदाय का भेद तो नितान्त भ्रामक कल्पना है, यद्यपि मैं यह स्वीकारता हूँ कि कुछ बातें देश काल परिस्थिति के अनुसार बदल भी जाती हैं। परन्तु इसी तर्क पर भिन्न–भिन्न परस्पर विरुद्ध विचारों को सत्य मान लेना सत्य के साथ घोर अन्याय है। ईश्वर के नियम सार्वदेशिक, शाश्वत तथा सर्वहितकारी होते हैं। ईश्वर एक है, उसकी व्यवस्थायें भी एक ही हैं, चाहे वे भौतिक क्षेत्र में हों अथवा आध्यात्मिक क्षेत्र में। उन्हें ही सत्य धर्म तथा वास्तविक विज्ञान कहा जा सकता है। और उसी सत्यमार्ग पर मानव मात्र को प्रवृत्त करना मेरा ध्येय है। मैं, संसार भर के विद्वानों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, व धर्मानुरागियों के स्नेह व सहयोग का अभिलाषी हूँ। इसके साथ ही मैं विश्वभर के प्रबुद्धजनों, प्यारे छात्र–छात्राओं, पत्रकारों, शिक्षाविदों, समाज–शास्त्रियों, अर्थ–शास्त्रियों, राजनेताओं, उद्योगपतियों, व्यापारियों, कृषकों, श्रमिकों नास्तिकों, साम्यवादियों, या अन्य किसी भी क्षेत्र के प्रतिभाशाली युवाओं का आह्वान करता हूँ कि

वे मेरे विचारों व उद्धेश्य पर एक बार शांत व निष्पक्ष हृदय एवं प्रखर तार्किक मस्तिष्क से गंभीरता से विचार करें। यदि उनके निष्पक्ष आत्मा को यह मार्ग सत्य व सर्वहितकारी प्रतीत होवे तो अपने–अपने ढंग से यथेष्ट सहयोग करें व करावें।

आइये! मेरे विश्व भर के मित्र जनो। हम सब मिलकर इस पृथिवी को परमात्मा का एक परिवार मानकर वेद के श्ब्दों में कहें–

संगच्छध्वं संवदध्व.................................... समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् .... (ऋग्वेद)

अर्थात् हम सब मानव प्राणिमात्र के कल्याणार्थ साथ–साथ चलें, समान विचार वाले बनें, हमारी मंत्रणायें, सभायें, मन, चित्त, हृदय, सभी समान भाव रखने वाले हों। कोई भी परस्पर विरोधी न रहे, जिससे संसार में सर्वत्र शान्ति, आनन्द, भातृभाव का सुखद साम्राज्य होवे।

इन्हीं कामनाओं व भावनाओं के साथ

आप सबका अपना ही
अग्निव्रत नैष्ठिक
प्रमुख–श्री वैदिक स्वस्ति पंथा न्यास,
आचार्य (शोधकर्ता)–वेद विज्ञान मंदिर भागल–भीम
वाया–भीनमाल जिला–जालोर (राजस्थान) भारत
चल दूरभाष – 9414182173, 9829148400

!! ओ३म् !!

सभी वेदभक्त भाइयों की सेवा में

अन्तर्वेदना! भीष्म–संकल्प

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

7 मई, 2006

मेरे वेदानुरागी बन्धुओ एवं वैदिक विद्वज्जनो! हमारे मंत्रद्रष्टा ऋषियों की यह घोषणा सदैव से रही है कि वेद ज्ञान–विज्ञान का मूल होने के साथ–साथ ईश्वरीय ज्ञान भी है। चतुर्वेदविद् ब्रह्मा ऋषि से लेकर ऋषि दयानन्द पर्यन्त ऋषि–मुनियों तथा अन्य सभी महापुरुषों की भी यही मान्यता रही है। वेद को स्वतः प्रमाण तथा अन्य आर्ष ग्रन्थों को परतः प्रमाण मानना सनातन परम्परा रही है।

–: पतन का मूल कारण :–

दुर्भाग्यवशात् महाभारत के समय से कुछ पूर्व विश्व में वेद के नाम पर कुछ विकृतियां भी जन्म लेने लगीं। इसके अनन्तर वेद केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित रह गया और उस वैदिक कर्मकाण्ड के नाम पर मांसाहार, अन्य हिंसा, व्यभिचार, पशुबलि, नरबलि, स्त्री व शूद्र वर्ग के प्रति बीभत्स व्यवहार, मदिरापान आदि अनाचार इस देश में फैल गया। एक ईश्वर के स्थान पर कल्पित बहुदेववाद प्रचलित होकर विश्व में सहस्रों मत मतान्तर परस्पर क्रिया– प्रतिक्रिया में उत्पन्न हो गये। इनमें से कुछ मत वेद वा आर्षग्रन्थों के नाम पर उनकी मिथ्या व्याख्या पर आधारित थे तो अन्य मत जैसे पारसी, यहूदी, ईसाई,चार्वाक, मुसलमान, जैन, बौद्ध आदि मत वैदिक कर्मकाण्ड की प्रतिक्रियावश इनके विरोध में उत्पन्न हुये। इधर वैदिक विद्वान् कहाने वालों ने वेद का आर्षशैली विरूद्ध मिथ्यार्थ करके तथा मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, गृह्यसूत्र आदि में अश्लील, अवैज्ञानिक व मानवता विरोधी मनमाने प्रक्षेप करके उपरिवर्णित पापों को बढ़ाने हेतु सत्य सनातन वैदिक धर्म के स्थान पर शैव, शाक्त, वैष्णव, वाममार्ग (जो अतिभ्रष्ट मार्ग था) अद्वैत, द्वैत, आदि अनेकों मत चला दिये।

दुर्भाग्य यह था कि ये सारे पाप परमात्मा तथा परमात्मा के ज्ञान वेद तथा सकल मानव जाति के सदा हितैषी पवित्रात्मा ऋषियों, देवों तथा अन्य महापुरुषों के नाम पर हुये तथा अपने–अपने मतों को सब सनातन धर्म होने का दावा करने लगे। जिस महाभारत से पूर्व भले ही राक्षस, असुर आदि जातियों में मदिरा, मांस आदि का बीभत्स प्रयोग होता था, यहाँ तक कि मानव–मांस भी खा जाया करते थे परन्तु वेद के नाम पर कोई सम्प्रदाय उन दिनों शायद प्रचलित नहीं हुआ परन्तु महाभारत के बाद मतों– सम्प्रदायों की बाढ़ आ गयी। इतने पर भी सभी नाम से वैदिक व आर्य सनातनी ही कहाते थे। इन पापों की प्रतिक्रिया में ही कुछ महापुरुषों ने अपने–अपने विचारों का स्वतंत्र रूपेण प्रचार समाज सुधार हेतु प्रारम्भ किया। उनके विचारों का आधार पूर्णतया वेद नहीं था। वेदाध्ययन का अधिकार जन्मना ब्राह्मणों तक ही सीमित रह गया और वह भी वेदपाठ तथा कर्मकाण्ड तक सीमित रह गया। इस कारण इन सन्तों के शिष्यों ने उनके नाम से नये मत चला दिये। इनमें प्रमुख मत हैं– कबीर पंथ, सिख पंथ, दादू पंथ, राधास्वामी, जैन व बौद्ध आदि। अन्य पंथों का प्रायः वैदिक धर्म से कहीं न कहीं अपेक्षाकृत विशेष जुड़ाव था। ये सारे मत निरन्तर धीरे– धीरे हिन्दू धर्म नामक नये नाम से प्रसिद्ध हो गये। जो "ब्राह्मण ग्रन्थ पुराण" नाम से जाने जाते थे तथा जो ऋषियों के वेद व्याख्यान ग्रन्थ थे, उनमें भी अनेक प्रक्षेप हुये साथ ही अपनी कल्पना तथा कुछ ब्राह्मण–ग्रन्थों व वेदों के आख्यानों के मिथ्यार्थ के आधार पर अन्य नवीन पुराणों की रचना भी इसी संक्रमण काल में हुयी जिनके रचयिता संस्कृतज्ञ आचार्य थे। इनका रचयिता कोई एक आचार्य न होकर अनेक विद्वान् समय–समय पर लिख–लिख कर बढ़ाते गये जिनमें अनेक विचार वेदानुकूल, वैज्ञानिक व ऐतिहासिक थे परन्तु अनेक बातें भयंकर अश्लील, अमानवीय व कल्पित अवैज्ञानिक भी थीं। पुराण रचयिताओं ने संसार में प्रसिद्धि यह की कि सभी महापुराण महर्षि वेदव्यास जी की रचना हैं ताकि इन्हें जन सामान्य प्रमाण मान सके। इन पुराणों तथा आर्ष ग्रन्थों के प्रक्षिप्त–भाग पर दृष्टिपात करें तो कोई ऐसा पाप नहीं जिनकी प्रेरणा इन ग्रन्थों से नहीं

मिलती हो। उपर्युक्त पापों की जड़ ही ये हैं। ऋषियों में विश्वामित्र, वशिष्ठ, पराशर, ब्रह्मा आदि, देवों में विष्णु, महादेव, इन्द्र, चन्द्र, बृहस्पति आदि अन्य महापुरुषों में राम, कृष्ण आदि को कामी, क्रोधी, हिंसक इन ग्रन्थों ने बताया है। कौन ऐसा ऋषि, देव आदि हुआ है जिसको चरित्रहीन न बताया हो? ऋषियों को गोमांस भक्षक तक बताया। शोक है कि जो धर्म सबको उच्च ब्रह्मचर्य, सदाचार व विश्वबन्धुत्व की शिक्षा देने वाला, ज्ञान–विज्ञान का स्रोत था, वही धर्म हमारे तथाकथित धर्माचार्यों को कामी–पापी व अविद्याग्रस्त बनाने का साधन बन गया। श्री कृष्ण के नाम पर कितनी सतियों का सतीत्व इनके भक्त कहाने वाले कितने ही नकली धर्माचार्यों ने राधा, गोपियां तथा कुब्जा की कामुक लीलायें सुना–सुना कर लूटा होगा। कितने ही शिव भक्त, मंदिरों में भांग, गांजे, तम्बाकू, अफीम, चाय और कहीं–कहीं मदिरा के नशे में चूर रहते हैं। कितने ही भक्तों ने पूजा के नाम पर निरीह जानवरों की गर्दन पर छुरियाँ चलायी हैं। फिर मुसलमान की कुर्बानी को ही बुरा क्यों कहें? हाँ वे मुसलमान इनसे बढ़कर अवश्य हैं। मेरे भाइयो सोचो! महाविद्वान् हनुमान् तथा नीतिज्ञ जाम्बवान् जैसों को बंदर व भालू कहकर किसने उपहास का पात्र बनाया? नारद जैसे महाविज्ञानी का नाम चुगलखोर के रूप में किसने प्रसिद्ध किया? वशिष्ठ व विश्वामित्र को परस्पर द्वेशी व क्रोधी किसने बताया? ब्रह्मा जैसे महावेदवेत्ता ऋषि को स्वपुत्री गामी किसने लिखा? श्रीराम जैसे सर्वभूतहितैषी महामानव को निर्दोष शम्बूक–हन्ता तथा निर्दोष सीता का निष्कासक किसने कहा? महादेव शिव जैसे महान् योगी को नशे में मदमस्त रहने वाला तथा दारूवन में घोर शर्मनाक–अश्लील कर्मकर्ता किसने कहा? विष्णु पर चरित्र हीनता, क्रोध तथा बार–बार पाप करके ऋषियों के शाप से पीड़ित रहने तथा वीरभद्र से मार खाने का दोष किसने लगाया? भगवान् मनु जैसे सकल शास्त्रज्ञ मानव हितैशी को दलित व स्त्री विरोधी किसने सिद्ध किया? खजुराओं जैसे मन्दिरों में धर्म के नाम पर अश्लील मूर्तियों का पूजन किसने प्रारम्भ कराया? श्री कृष्ण जैसे योगी ही नहीं बल्कि योगेश्वर को चोर जारशिखामणि, मामी राधा का प्रेमी, तस्कर,

बलात्कार कर कुब्जा का हन्ता आदि नामों से किसने बदनाम किया? अरे जरा शिवलिंग पूजा की उत्पत्ति का विधान अपने ग्रन्थों में पढ़कर तो देखो, लज्जा को भी डूब मरने का स्थान नहीं मिलेगा। मेरे भाइयो! मेरा निवेदन है कि आप स्वयं अपने महापुराण कहलाने वाले ग्रन्थों को एक बार पढ़कर अवश्य देखें मेरा दावा है कि आप स्वयं रो पड़ेंगे और मेरी पीड़ा में सहभागी बनेंगे। जो कथावाचक वा लेखक विद्वान् पुराणादि की अश्लील व असम्भव कथाओं की आध्यात्मिक वा वैज्ञानिक मनोहारी व्याख्या नादान जनता के सम्मुख करके उल्टा हम आर्य विद्वानों को ही अज्ञानी बतलाते हैं। उनसे मेरा विनम्र निवेदन है कि वे मेरे वा किसी वैदिक विद्वान के सम्मुख बैठकर प्रीतिपूर्वक संवाद करके अपनी व्याख्या करने का कष्ट करें। क्या वे हर अश्लील व असम्भव कथा की ऐसी व्याख्या व्याकरणादि शास्त्रों तथा पूर्वापर प्रसंगों के आधार पर कर सकते हैं। क्या इस प्रकार की व्याख्या (अनेक विद्वान् रामायण, गीता व महाभारत आदि ऐतिहासिक ग्रन्थों की भी ऐसी ही व्याख्या करते हैं) करने वालों ने कभी विचार किया कि इस प्रकार की व्याख्या नहीं बल्कि वाक्छल से आप आरोपों से बचने का असफल प्रयास अवश्य कर लें परन्तु इससे श्रीराम, श्रीकृष्ण जी, हनुमान्, महादेव आदि का इतिहास मिट गया है और जो कोई इन्हें मानता भी है, वह भी इनके इतिहास को भुला देगा तब आप किस पर गर्व करेंगे?

मेरे प्यारे देवों, ऋषियों व आर्यों के वंशज मेरे भ्राताओ! इन पापों को लेकर कोई ईसाई, मुसलमान, कामरेड अथवा अत्याचारों का मारा कोई दलित हमारे ऋषि, मुनियों, वेदों पर आपत्तिजनक कुछ लिख देता है, उन्हें गाली देता है, मनु को पापी कहता है तो आप तुरन्त भावनाओं के ज्वार में भोली धर्मभीरू जनता को बहा देते हैं, तोड़–फोड़, धरने, प्रदर्शन पर उतर पड़ते हैं। इसे धार्मिक भावनाओं को आहत करने वाला मानते हैं। बेचारी भीड़ को पता ही नहीं है कि ये सारे पाप उसके ग्रन्थों में ही लिखे हैं जिन ग्रन्थों को उस जनता ने कभी पढ़ा ही नहीं तो कुछ को पढ़ने से वंचित कर दिया है। वेद को कपड़े में लपेट कर मंदिर में

पूजा करने मात्र के लिये रखा है। स्त्री व शूद्र को सदियों तक इसको पढ़ने व सुनने के अधिकार से वंचित रखा। आप आरोपी के आरोपों का उत्तर देने का साहस नहीं कर पाते। आपके धर्माचार्य मौन साध लेते हैं।

—: उठो, जागो और सत्य को स्वीकार करने का साहस करो। :—

अरे बड़ी–बड़ी भीड़ को भागवतादि की कथा सुनाने वाले कथावाचक भाइयो! आप तो कम से कम इन दोषों से कुछ अवगत होंगे? अरे कथाओं के नाम पर यश व धन बटोरने में दक्ष मेरे बन्धुओ! क्या आप भागवत, ब्रह्मवैवर्त वां शिवपुराणादि की अश्लील कथाओं को मंच पर अथवा अपने पुत्र–पुत्रियों को यथावत् सुनाने का हृदय रखते हो? आप तो परमात्मा से डर कर हमारा दर्द सुनो! बड़े–बड़े शंकराचार्य महामण्डलेश्वर कहाने वाले आदरणीय महानुभावो! आप तो शास्त्रों से कुछ परिचित हो। आप तो साहस करके इन ऋषियों, देवों व महामानवों पर लगे मिथ्या पाप को धो डालने में सकल महर्षिमण्डल, देवमण्डल व भारतीय महामानवों के इतिहास के सत्यार्थ के प्रचारक व उद्धारक, सकल शास्त्रज्ञ, मानवताहितैषी, स्वराज्य के प्रथम मन्त्र दाता होते हुये भी विश्वबंधुत्व के प्रचारक महान् गोभक्त योगिराज ऋषि दयानन्द सरस्वती का अनुयायी बनने का साहस करो। संसार में एक मात्र वैदिक सत्य सनातन धर्म के साम्राज्य हेतु, सकल मानवता के कल्याणार्थ तथा विशुद्ध राष्ट्रवाद की स्थापना हेतु आप और हम आर्यजन मिलकर काम करें। आप व हम दोनों ही वेदभक्त, देव तथा ऋषियों के वंशज हैं। आओ! अपने को सनातनी कहने वाले मेरे भाइयो! सोचो कि सनातन तो केवल वेद हैं जिसे ही सभी ऋषियों– देवों तथा भूमण्डल के महामानवों ने अपना आदर्श आधार माना था। जिसका आदर्श महाभारत के पश्चात् समाप्त हो गया था, उसे ही ऋषि दयानन्द ने याद दिलाते हुये कहा था "हे भूमण्डल के मानवो! वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। यही ईश्वरीय ज्ञान है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद चार संहितायें ही वेद हैं। इन्हें पढ़ने–सुनने का मानव मात्र को अधिकार है। हर आर्य (श्रेष्ठ–सदाचारी) पुरुष का परमधर्म वेद पढ़ाना व पढ़ना है।" मेरे सनातनी कहाने वाले भाइयो! सोचो! कि आप इस

घोषणा में क्या ऐसा पाते हैं, जिससे आर्य समाज तथा दयानन्द से दूर रहना चाहते हैं? क्या आप नहीं चाहते कि वेद की प्रतिष्ठा फिर से विश्व में स्थापित होवे? क्या आप नहीं चाहते कि संसार के सात़ अरब मानव वेद भक्त बनें, अवैदिकता संसार से समाप्त हो? क्या आप नहीं चाहते हैं कि सम्पूर्ण विश्व एक 'ओ३म्' की उपासना करे? क्या आप नहीं चाहते हैं कि ऋषियों व वेदों के नाम पर फैली उपरिवर्णित गन्दगी को साफ किया जाये? क्या आप नहीं चाहते हैं कि हमारे पूज्य ऋषि–मुनियों, ब्रह्मा, महादेव, विष्णु आदि देवों तथा मनु राम–कृष्णादि महापुरुषों के उज्ज्वल चरित्र को विश्व में पूजा जाये, इन पर कोई कलंक लगाने की नादानी न करे, विश्व के सभी मानव इनको अपना पूर्वज मानकर इनके आदर्शों का अनुकरण करें? क्या आप नहीं चाहते हैं कि जो भारतीय इतिहास चमत्कारों–अलंकारों के पत्थरों में दब गया है, हमारे रामायण, महाभारत को कल्पित कहानियाँ बताया जा रहा है, वे ग्रन्थ कल्पित व दूषित कथाओं से मुक्त होकर विश्व की ऐतिहासिक सम्पदा के रूप में प्रसिद्ध हो सकें, विश्व के सब लोग गर्व से आर्य कहना प्रारम्भ करें? क्या आप नहीं चाहते हैं कि वैदिक ज्ञान व विज्ञान आधुनिक विकसित विज्ञान को नयी दिशा दे सके और हम लोगों का सोया व मृत स्वाभिमान जाग्रत हो सके? हमारा देश पुनः चक्रवर्ती राष्ट्र तथा जगद्‌गुरु का स्थान प्राप्त कर सके? यदि हां, तो प्यारे मित्रो! आइये! हमारे साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना प्रारम्भ करें। ऋषि दयानन्द रूपी प्रवेश द्वार से प्रविष्ट होकर वैदिक वाङ्.मय तथा दैवी संस्कृति के दिव्य दर्शन करने में हम सब मिलकर प्रयत्नशील हों, जिससे पुनः राम–राज्य साकार हो सके।

मेरे प्यारे वेद भक्तो! आप अब यह समझ गये होंगे कि उपर्युक्त सभी समस्याओं की जड़ यह है कि यह देश व विश्व वेद के सत्य स्वरूप को भूल चुका था। यदि ऐसा नहीं होता तो जिस वैदिक युग का सुचलन विश्व में करोड़ों वर्ष से चल रहा था, वह इन पाँच हजार वर्ष मात्र में धूल–धूसरित नहीं हो गया होता। सबने वेद को पीछे छोड़कर अथवा मिथ्यारूप से ग्रहण कर संसार को सुधारने का प्रयास किया, इसी कारण

ये प्रयास शान्तिविधायक एवं मानवता के हितैषी सिद्ध नहीं हो सके। विश्व के अधिकांश मानव यह स्वीकार करने को तैयार ही नहीं होंगे कि वे भी वैदिक पूर्वजों के ही वंशज हैं।

—: निवेदन इस्लामी, ईसाई व अन्य मतावलम्बी भाइयों से। :—

मैं मुसलमान भाइयों से पूछता हूँ कि वे जिस वेद को काफिरों का ग्रन्थ तथा वैदिकों को काफिर कहते हैं उनके कुरआन ग्रन्थ में क्या नहीं लिखा है कि पूर्व में सभी मनुष्यों का एक ही मत था? अनेक मत धीरे–धीरे बाद में उत्पन्न हुये हैं। क्या आप नहीं बतायेंगे कि वह एक मत कौन सा था? क्या वेद से पुराना कोई ग्रन्थ आज तक किसी ने सुना व पढ़ा है। तब क्या आप उसी मत की संस्थापना में हमारा साथ नहीं देंगे? जिन बुराइयों की प्रतिक्रियावश जो–जो मत चले क्या उन मतों के अनुयायियों को नहीं चाहिये कि ऋषि दयानन्द जैसे वेदोद्धारक व मानवता प्रचारक के आने से वे बुराइयाँ स्वयं समाप्त हो गयीं वा उनका ज्ञान हमें होने लगा है तब उनकी प्रतिक्रिया में जन्मे मतों का अब औचित्य ही कहाँ रहा? जब एकेश्वरवाद वेद में है ही तब कुरान, बाइबिल को अलग से चलाने की आवश्यकता ही कहाँ? फिर क्या इनके नाम पर हिंसा, कब्रपूजा, मांसाहार जैसे घातक पाप नहीं हो रहे हैं? क्या मानवता का खून इनके नाम पर नहीं बहाया गया है? क्या प्रेम व भाईचारे का सन्देश वेद से अच्छा कहीं मिल सकता है? मेरे ईसाई व मुसलमान भाइयो! क्या आपके ग्रन्थों की कथायें विज्ञान व बुद्धि की कसौटी पर खरी सिद्ध होती हैं? आज जब बलि तथा मांसाहार आदि कथित धर्मानुमोदित पापाचार समाप्त हुआ तो इसकी प्रतिक्रिया में जन्मे जैन, बौद्ध मत की संसार को आवश्यकता क्या है, जिसमें ईश्वर का अस्तित्व तक नहीं माना जाता। जिनके ग्रन्थों में अनेक अवैज्ञानिक कथायें भरी पड़ी हैं। जैन ग्रन्थों को भी दोष छिपाने के उद्देश्य से जन सामान्य से दूर रखा जाता है। क्या यह जैन साधुओं की सत्य परायणता कही जायेगी? मेरे भाइयो! जिस अहिंसा को परम धर्म आपके मत में माना गया है, उस अहिंसा का मूल स्रोत वेद है। पातंजल योगदर्शन में इसे सबसे प्रथम साधन तथा महाव्रत कहा है। सच्चाई यह

है कि आप 'अहिंसा' शब्द के अर्थ को ठीक–ठीक नहीं जान पाये जिससे कायरता वा दुष्ट को सदैव क्षमा करने रूपी मिथ्या अहिंसा के व्यवहार ने इस देश को पराधीन बना कर नष्ट–भ्रष्ट कर डाला। जबकि वेदानुमोदित अहिंसा का तात्पर्य है– प्राणिमात्र के प्रति प्रेम, वैरत्याग तथा न्यायार्थ दुष्ट को उचित दण्ड निष्काम व निष्पक्ष भावना से देना। महात्मा बुद्ध व महामना महावीर जैसे महापुरुष वेद का यथार्थ नहीं समझ पाये इसी कारण वे वेद को महत्व नहीं दे सके तथा यज्ञ के नाम पर पशुबलि को देख कर वे पवित्रात्मा वेद के ही विरोधी बन गये। इसमें उनका कोई दोष नहीं था, बल्कि वेद के प्रति अज्ञानता ने ही उन्हें ऐसा करने को बाध्य किया परन्तु आज वेद का कुछ प्रकाश हुआ है। अब तो आप कुछ विचारो! इसलिये भूमण्डल के मानवो! आओ! ईश्वर एक है, हमारे शरीर एक जैसे हैं, प्रकृति सबके लिये एक है, तब एक धर्म जो सनातन–सत्य वैदिक है, के ही अनुयायी बनने का व्रत लो, जिसका सत्य स्वरूप ही हजारों वर्ष पश्चात् ऋषि दयानन्द ने बतलाया था। कारण मिटने पर कार्य भी मिटना चाहिये। मेरे मित्रो! बार–बार ऋषि दयानन्द की बात इस कारण कर रहा हूँ। कि इनके अतिरिक्त और कोई महापुरुष पिछले कुछ हजार वर्षों में दिखाई नहीं देता जिसने सत्य के ग्रहण और असत्य के परित्याग की इच्छा से भारत के सभी मतों के विद्वानों का संवाद हेतु आह्वान किया तथा स्वयं ने सत्य जान कर ही वेद को स्वतः प्रमाण के रूप में ग्रहण किया तदुपरान्त जिसने केवल वेद को अपना आदर्श व आधार बनाया। वे जानते थे, "यदि वेद से हटकर कुछ भी अपना पाठ पढ़ाने का प्रयास किया गया तो आर्य समाज भी मेरे नाम पर चला एक सम्प्रदाय बनकर रह जायेगा। जिस सम्प्रदायवाद रूढ़िवाद के जाल से मैं मानवता को मुक्त कराना चाहता हूँ, वह होना तो दूर यह आर्य समाज भी स्वयं एक सम्प्रदाय बन जायेगा।" इस कारण उन्होंने वेद को ही आधार बनाया, जो उनका विगत कुछ (ऋषि परम्परा नष्ट होने के पश्चात्) हजार वर्षों में जन्मे महापुरुषों से वैशिष्ट्य था। हाँ बीच में आद्य शंकराचार्य महाराज भी इसी भावना से बढ़े थे परन्तु अल्पायु में संसार से विदा हो जाने से वे वेद

का काम नहीं कर सके तथा उनके भाव को उचित ढंग से नहीं समझ पाने के कारण उनके भक्तों ने अद्वैतवाद नामक नया ही सम्प्रदाय चला दिया।

—: आर्यो! जरा सोचो कि आप कहाँ हो? :—

मेरे आर्य विद्वज्जनो! मुझे खेद है कि ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना करते समय जो आशंका व्यक्त की थी, वह आज सच होती प्रतीत हो रही है। आज आप न केवल पौराणिकों अपितु महादेव, विष्णु, ब्रह्मा, नारद, इन्द्र जैसे महापुरुषों की भी कटु आलोचना करने लगते हैं। क्या आप इनके पौराणिक स्वरूप के खण्डन के साथ महाभारत आदि ग्रन्थों में बताये गये इनके उज्ज्वल स्वरूप को कभी बताते हैं? क्या आपने ऋषि दयानन्द से महान् प्राचीन ऋषि–महर्षियों को नहीं भुला दिया है? क्या आप ऋषि दयानन्द रूपी दीपक के प्रकाश में पूर्व ऋषि–मुनियों और देवों की महानता को समझने का प्रयास करेंगे? यदि नहीं तो मैं दृढ़ता से कहूँगा कि आप दयानन्द को समझ नहीं पाये। मेरे आर्य बन्धुओ! आज आपके ऊपर ऋषि दयानन्द का अनुयायी होने के कारण सृष्टि के आदि काल से लेकर अब तक सभी महापुरुषों की विश्ववारा संस्कृति तथा वैदिक ज्ञान–विज्ञान को बचाने का अन्यों की अपेक्षा अधिक गुरूतम दायित्व है। आज़ आपको भी अपने अन्दर झाँक कर देखना है कि आपने भी इस दायित्व को कितना निभाया है? ऋषि दयानन्द के विराट् व्यक्तित्व को लोभ–लालच, हठ, दुराग्रह व अविद्या से ग्रस्त अन्य साम्प्रदायिक–आचार्य, मौलवी, पादरी, ग्रन्थी, सन्त–महन्त तो नहीं समझे परन्तु आपने कितना समझा है? आपने ऋषि को केवल सुधारक समझा इसी कारण समाज सुधार क्षेत्र में कूद पड़े और वेद का कार्य छूट गया। देश को स्वतंत्र कराने में सारी शक्ति लगा दी। देश ने अनेक आर्य वीर पुरुषों की बलि लेकर स्वतंत्रता का लाभ भी लिया परन्तु स्वतंत्र देश ने आर्य समाज के त्याग को पूर्णतः भुला दिया। न केवल भुला दिया अपितु आर्य समाज के छूआछूत–विरोधी–आन्दोलन, लोकतन्त्र, पर्दाप्रथा, समाजवाद, स्त्रीशिक्षा आदि के कार्यों के सुपरिणाम के स्थान पर

देश के वोटों के व्यापारियों तथा पाश्चात्य कुसभ्यता के दासों ने जातिवादी विघटन, आरक्षण रूपी विषवपन, गुणविरोधी केवल गणपूजन, भीड़तन्त्र, नशाखोरी, अश्लील अंगप्रदर्शन व उन्मुक्त यौनाचार व इसके विज्ञापन, योग्यता का हनन, पारिवारिक विध्वंस आदि दुष्परिणाम यह देश भोग रहा है। परन्तु कोई राजनैतिक दल अपने स्वार्थ के कारण इस भंयकर समस्या को समस्या ही नहीं मानता बल्कि इसे समाज कल्याण की दवा मानता है। आज अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर इस देश में क्या–क्या पाप नहीं हो रहा है? हर व्यक्ति स्वतंत्र नहीं बल्कि उन्मुक्त है, उन्मत्त है, एवं स्वच्छन्द है। मेरे देशभक्त भ्रातागण! मैं इस पर गहराई से सोचता हूँ, तो मेरा आत्मा कराह उठता है कि इस जलते राष्ट्र, उजड़ते समाज व टूटते परिवारों को कौन बचायेगा? इस सब नाश का कारण क्या है? समाज–राष्ट्र सुधार के उपाय करते–करते यह कुफल क्यों निकला? कहाँ व क्या भूल हुयी? मेरा विश्वास है कि हम लोगों ने वेद की ओर नेत्र बंद करके समाज सुधार व देश को स्वतंत्र कराने में सारी शक्ति लगा दी। जिस वेद को ऋषि ने अपना प्राण माना था, उस प्राण का हनन हम आर्यों ने कर डाला। तथा जो वेद का काम हुआ भी वह भी मात्र साधारण उपदेश तक ही सीमित रह गया। जो वेद पौराणिकों के लिये पाठ करने तथा कर्मकाण्ड करके दक्षिणा लेने मात्र का साधन बन गया था वही वेद हम आर्यों के लिये आचार, समाज, अध्यात्म आदि विषयों पर सुन्दर प्रवचन करने तक ही सीमित रह गया है। पौराणिकों के परम्परागत वेदपाठियों ने अपने कण्ठ में वेद को उस बर्बर मुस्लिम काल में भी सुरक्षित रखा था, इसके लिये सारा वेद भक्त समाज उनका चिरऋणी रहेगा। मैं उन दिवगंत वेदपाठियों को सश्रद्ध नमन करता हूॅ परन्तु ऋषि दयानन्द ने जिस वैदिक स्वरूप को संसार में प्रतिष्ठित करने का महान् दायित्व हमें सोंपा था, उसे हम आर्य समाजी कहाने वाले नहीं निभा सके। ऋषि के जीवन काल में वैदिक समाज को जिसे प्रायः विदेशियों द्वारा प्रदत्त हिन्दू नाम से सम्बोधित करने लगे थे, वे हिन्दू पाश्चात्य शिक्षा की चकाचौंध से भयभीत होकर दीन–हीन बन गये थे, उनको सत्य वेदार्थ का दर्शन कराके उनमें

नव स्वाभिमान का संचार करने का दायित्व ऋषि ने हमें सोंपा था। और न केवल ऐसा करना अपितु पाश्चात्यों, मुस्लिमों तथा सभी मानवों को भी वेद का सत्य स्वरूप समझाकर उन्हें भी वैदिक ऋषियों का वंशज सिद्ध करके, वैदिक तथा आधुनिक भौतिक विज्ञान का समन्वय सिद्ध कर, न केवल ऐसा करके बल्कि वेद में सभी ज्ञान–विज्ञान का मूल सिद्ध करके उन्हें वेद भक्त बनाना हमारा कर्तव्य बतलाया था, वह हमने कहाँ किया? ऋषि यह भी मानते थे कि वेद के सत्य स्वरूप के प्रकाशित होते ही विश्व के मतपन्थ समाप्त होकर सम्पूर्ण भूमण्डल में एक मात्र वैदिक धर्म का साम्राज्य होगा।

–: वेद का वेदत्व बचाना ही होगा। :–

बन्धुओ! आज हम वेद प्रचार के नाम पर क्या कर रहे हैं? मैं वैदिक विद्वानों द्वारा लेखन, प्रवचन व पत्रवाचन द्वारा वैदिक शब्दों की भाँति–भाँति की मनोहारी व्याख्या करते देखता हूँ, कल्पनाओं को वेद में थोपते देखता हूँ, तो कहीं व्याकरण, निरुक्त के आधार पर सुन्दर व्याख्या करते देखता हूँ तो सोचता हूँ कि वेद का वेदत्व तो कहीं दिखाई नहीं दे रहा। मिथ्या दम्भयुक्त दावे करने से वेद का वेदत्व बचेगा नहीं। वेद का सत्यार्थ जानना, उसका विज्ञान प्रकाशित कर उससे संसार के कल्याणार्थ निरापद तकनीक का निर्माण करने तथा वेद को ईश्वरीय सिद्ध करना ही वेद के वेदत्व को बचाने का एक मात्र उपाय है। आज कौन विद्वान् ऐसा करने का दावा कर सकता है? मैं कभी–कभी अपने बन्धुओं को वेद में से आइंस्टीन, न्यूटन, हॉकिन्स आदि के सिद्धान्तों को ठीक उसी रूप में खोजने का यत्न करते देखता हूँ, तो कहीं बिग बैंग कल्पना को वेदमंत्रों द्वारा सिद्ध करते देखता हूँ, तो प्रतीत होता है कि वे आधुनिक विज्ञान को पहिले स्वतः प्रमाण मानते हैं फिर उसको आधार बनाकर वेद की अपने ढंग से मनगढ़ंत व्याख्या करते हैं, तो कोई महानुभाव वेद में अनेक यंत्रों के नामों का उल्लेख मात्र पाकर उन मंत्रों को संकलित करके अपने कार्य को महती शोध कहकर प्रचारित करते हैं। वे नहीं सोचते कि आधुनिक विज्ञान परिवर्तन का विकल्प रखता है परन्तु वेद मंत्र परिवर्तनीय नहीं है

तथा संकलन का नाम शोध नहीं है। हमें वेद के विज्ञान को आर्ष व वैदिक दृष्टि से ही परन्तु आधुनिक विज्ञान के गम्भीर अध्ययन के साथ देखकर ही सावधानीपूर्वक समन्वय का सम्भव प्रयास करना होगा। सर्वत्र समन्वय हो ऐसा आवश्यक नहीं है।

मान्य बन्धुओ! यह कार्य अत्यन्त आवश्यक है। मेरा मानना है कि आर्य समाज के दस नियम सम्पूर्ण मानव धर्म रूपी विशाल वृक्ष हैं, जिसके मूल हैं, आर्य समाज का तृतीय नियम (वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।) तथा प्रथम नियम अर्थात् जगत् तथा वेद दोनों का रचयिता ईश्वर है। फ़ल इसका छठा नियम (संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।) तथा अन्य सभी नियम इसके पुष्प,पत्र तथा शारवायें हैं। दुर्भाग्य से हम लोग मूल को बचाये बिना सबको सुधार कर उपकार के फल खिलाना चाहते हैं। एतदर्थ स्कूल, कालेज, चिकित्सालय, योगा नामक व्यायाम शिक्षणालय, वृद्धाश्रम, अनाथालय, कढ़ाई–बुनाई केन्द्र आदि खोलकर सोच रहे हैं कि हम संसार को स्वर्ग बना देंगे। हम ईसाई, मुसलमान, कामरेड़ों की भरपेट निन्दा मात्र को देशभक्ति समझते हैं। हिन्दू रूपी समुदाय के मूर्तिपूजा, अवतारवाद आदि के खण्डन मात्र में धर्म–संशोधन समझने का भ्रम पालते हैं। श्वसन क्रियाओं तथा आसन व्यायामों को पातंजल योग समझते हैं, वेद पर मनोहारी, उत्तेजक भाषणबाजी मात्र को वेद प्रचार समझते हैं। इस सबका प्रतिफल ही यह है कि वेद का वेदत्व मिट गया है। वेद को साम्प्रदायिक ग्रन्थ मात्र समझा जा रहा है। हमने अपनी पीढ़ी को मूर्तिपूजादि दोषों से हटाकर नास्तिक तो बनाया है परन्तु सच्ची भक्ति का पाठ कहाँ पढ़ा सके? हम सच्ची देश भक्ति व मानवता का पाठ भी कहाँ पढ़ा सके। हम हृदय से कहाँ विश्वास स्वयं भी कर सके कि वेद परमात्मा की वाणी है। जहाँ वेद सम्मेलन हों, वहाँ महान् वेदोद्धारक दयानन्द की चर्चा भी न हो, यह क्या दयानन्द व आर्यसमाज की मृत्यु नहीं है? मैंने जो देखा है, देख रहा हूँ उससे हृदय काँप उठता है। आचार भ्रष्टता की चर्चा मैं यहाँ

नहीं करना चाहता। मैं केवल सिद्धान्त की चर्चा कर रहा हूँ। मैंने एक उच्च योग्यताधारी आर्य विद्वान् को सन् 88 में वेद तथा आर्षग्रन्थों में मूर्खता सिद्ध करते देखा था तब इस क्षेत्र में मैं नवागन्तुक दंग रह गया था। तब मैंने दीक्षागुरु पूज्य स्व. आचार्य प्रेमभिक्षुजी महाराज (वेद मंदिर–मथुरा) को कहा कि यह व्यक्ति आर्य समाज का विद्वान् होते हुये भी आर्य समाज के मूल को चुनौती दे रहा है। उसी समय संकल्प जागा कि कुछ भी हो आर्य समाज के प्रथम व तृतीय नियम को बचाना चाहिये परन्तु अस्वस्थता, अपेक्षित मार्गदर्शक, साधन व परिस्थितियों के अभाव में संकल्प का बीज मन में ही दब गया तथा समीक्षात्मक लेखन व अन्य सामाजिक कार्यों में समय व्यतीत करता रहा। मैंने कुछ वेद वक्ताओं, वेद गोष्ठी में पत्र वाचन करने वालों से एकान्त में पूछकर देखा तो किसी ने कहाँ कि वेद ईश्वरीय है तथा सर्वज्ञानमय है, ऐसा हृदय व मस्तिष्क से विश्वास नहीं होता। हां, दयानन्द ने कहा तो मान लेते हैं। यह एक नमूना है। क्या आर्य जगत् इस बात को भूल गया है कि कुछ काल पूर्व नागपुर से प्रकाशित आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र 'आर्यसेवक कई मास तक वेद पर प्रहार करता रहा। लेखक व सम्पादक दोनों ही तो आर्य कहलाने वाले थे। दोनों कह रहे थे, "हमने वेद पर आक्रमण नहीं किया है बल्कि हमारी वेद में शंकायें हैं जिन्हें अनेक विद्वानों के पास भेजा है, सन्तोषजनक समाधान नहीं मिला है। कोई समाधान कर सकता है तो करे।" अब भी क्या कोई मानने का भ्रम करेगा कि सभी आर्यों की वेद पर पूर्ण श्रद्धा है। जिनकी है उनकी स्थिति पौराणिकों की अन्धश्रद्धा से मिलती जुलती है। मुझे ऐसा ध्यान नहीं है कि कोई ऋषिभक्त विद्वान् विश्व के तो क्या कहूँ भारत के भी किसी प्रसिद्ध संस्थान में गर्जते हुये घोषणा कर सके कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है तथा सर्वज्ञानमय है। मान्यवर! मैं बड़ी विनम्रतापूर्वक निवेदन करूंगा कि एक मैंने विश्वस्तरीय वेद विज्ञान सम्मेलन में अगस्त 2004 में चुनौतीपूर्ण शैली में अपनी बात 'सृष्टि का मूल उपादान कारण' विषय पर रखने के पश्चात् विश्वस्तरीय वैज्ञानिक संस्थान भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, ट्रॉम्बे, मुम्बई के वैज्ञानिकों से इसी विषय पर उनसे

संवाद करके देखा है। जो आनन्द तथा प्रोत्साहन उन्होंने मुझे दिया, वह अपने में अद्‌भुत् प्रतीत हुआ। उस संवाद के पश्चात् न्यूक्लियर पॉवर कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड, मुम्बई के अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता श्री विजय कुमार जी भल्ला जो पूज्य स्वामी अमर स्वामी जी महाराज पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के समय से आर्य समाजी हैं तथा अनेक दार्शनिक व वैज्ञानिक ग्रन्थों का स्वाध्याय किये हैं और वर्तमान में विज्ञान भारती मुम्बई कार्यकारिणी के सदस्य हैं, ने मुझसे कहा, "मैं आर्य समाज तथा विज्ञान भारती द्वारा आयोजित वेद विज्ञान गोष्ठियों में वर्षों से भाग लेता रहा हूँ परन्तु ऐसा प्रथम बार हुआ है कि भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र के थ्यौरिटीकल एस्ट्रो फिजिक्स सैक्शन के हैड डॉ. आभास कुमार जी मित्रा जैसे विश्व स्तरीय वैज्ञानिक ने आपके विचारों की प्रमाणिकता को स्वीकार किया है। आपने केन्द्र के कई वैज्ञानिकों के समक्ष बिग बैंग थ्यौरी, क्वार्कमॉडल आदि का प्रभावी खण्डन किया है। मेरी इच्छा है कि आप अपने अब तक किये जा रहे लेखन, प्रवचन आदि को पूर्णतया बंद करके केवल वेद विज्ञान पर गहन अनुसंधान करके विश्व में वेदों को प्रतिष्ठित करें। अपने घर, समाज में लम्बे–लम्बे व्याख्यान देना, दावे करना सरल है परन्तु यहाँ ऐसे वैज्ञानिकों को प्रभावित करना ही आपके लेख की प्रमाणिकता है। .... आप मुम्बई में रहकर अपना शोध कार्य करें तो हम आपकी सम्पूर्ण व्यवस्था कर सकते हैं। .... आप अपने पत्र की व्याख्या में एक पुस्तक लिखें और इसका इण्टरनेट के माध्यम से विश्व में प्रचार करना चाहिये।

मैं भल्ला जी, डॉ. मित्रा साहब तथा डॉ. जगदीश चन्द्र जी व्यास की आत्मीयता से अभिभूत था। परन्तु स्वास्थ्य कारण के साथ ही मैं इसके पूर्व ही वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास का गठन कर चुका था परन्तु कार्य कुछ भी प्रारम्भ नहीं हुआ था, इस कारण इसी कार्य को न्यास के माध्यम से करने का वचन दिया। पाली–मारवाड़ में किराये का भवन लिया क्योंकि कोई भवन रहने को मेरे पास नहीं था। दमा रोग की पीड़ा से केवल मारवाड़ में ही शान्ति रहती है, इस कारण अन्यत्र स्थायी रहने पर विचार

भी नहीं किया और सत्य यह भी है कि किसी आर्य संस्था ने मुझे ऐसा कोई प्रस्ताव भी नहीं भेजा। हाँ, एक पौराणिक महंत महाराज ने नेशनल हाइवे पर एक सौ बीघे भूमि के साथ समस्त साधन उपलब्ध कराने का अति उदारतापूर्वक प्रस्ताव किया था परन्तु मैं वेद के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के ध्वज के नीचे एवं उन्हीं के आश्रय में ही काम करना चाहता था व हूँ, इस कारण उन महाराज जी को कृतज्ञता पूर्वक नमन करते हुये भी उनका प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। पाली में रहकर 'सृष्टि का मूल उपादान कारण' नामक पुस्तक हिन्दी में लिखी जिस पर प्रकाशन से पूर्व मुम्बई के कुछ वैज्ञानिकों जैसे– डॉ. आभास कुमार जी मित्रा, डॉ. जे. सी. व्यास, श्री भल्ला जी आदि से सप्ताह भर संवाद हुआ। फिर डॉ. मित्रा जी ने मेरे विचारों पर आश्चर्य व श्रद्धा व्यक्त करते हुये विश्व के वैज्ञानिकों को इसे पढ़कर लाभ उठाने की बात करने के साथ–साथ वेदों से कुछ प्रेरणा लेने का परामर्श दिया। यह मेरे तथा सम्पूर्ण आर्य वा वैदिक जगत् के लिये गौरव की बात है। मैंने सोचा कि एक विश्वस्तरीय वैज्ञानिक जो मुझसे से नितान्त अपरिचित हैं, केवल अभी–अभी परिचय हुआ है, ही इतने प्रभावित हो गये तब मेरे लेखों के हजारों प्रशंसक पाठक तथा लेख लिखने का आग्रह करने वाले विद्वान्, पत्रिकाओं के सम्पादक, प्रकाशक, साथी विद्वान्, संन्यासी, ब्रह्मचारी, आर्य– भामाशाह व कार्यकर्ता तो मुझे इस महान् लक्ष्य के लिये सहयोग हेतु तत्काल आगे आकर मुझे आर्थिक समस्याओं से पूर्ण मुक्त कर देंगे और मैं विश्व स्तर पर वैदिक ज्ञान विज्ञान को प्रतिष्ठित करने में सफल हो सकूँगा।

मेरे आत्मीय जनो! मैंने अपनी योजना छपवाकर लगभग 2000 की संख्या में सम्पूर्ण आर्य जगत् के यथासम्भव परिचित स्थानों पर भेजीं। 1200 डाक से 800 कार्यकर्ताओं द्वारा वितरित करायीं। कहीं से ही प्रतिक्रिया आयीं तो पुनः कुछ वैज्ञानिकों व विद्वानों की प्रतिक्रिया सहित छपवा कर भेजीं परन्तु दुःखद महादाष्चर्य कि जिन पर मैं श्रद्धा करता था, जिनकी आत्मीयता की प्रशंसा किया करता था, वे मेरे अतिनिकटस्थ विद्वान् मौन साध गये। मेरे निकटस्थ सम्पादक जिनके आग्रह पर गम्भीर

अस्वस्थता में भी लेख लिख–लिख कर निष्काम सेवा वर्षों से करता रहा, उन्होंने मेरे अनुरोध करने पर भी विज्ञप्ति तो दूर मेरे कार्य की सूचना तक छापना उचित नहीं समझा। मेरे आर्य जनो! जरा सोचो! कि मैं क्या कोई अनार्यत्व का कार्य कर रहा था? मुझ पर व्यंग्य भी किये गये, यह दर्द मेरे हृदय में कभी–कभी शूल की भाँति उठता है परन्तु सोचता हूँ कि मेरा ईश्वर, मेरा वेद व मेरा ऋषि परम्परा तथा सत्यनिष्ठ वैज्ञानिकों से अटूट सम्बंध है तब मैं क्यों किसी व्यक्ति विशेष पर आश्रित रहने का प्रयास करूँ? मैंने अपने न्यास के संरक्षक आर्य जगत् के क्रान्तिकारी सन्त श्रद्धेय स्वामी धर्मबंधु जी महाराज (राजकोट) तथा सह संरक्षक जिनसे मैंने व्याकरण भी पढ़ा था तथा जिनके दीक्षागुरु भी पूज्य स्व. प्रेमभिक्षु जी महाराज ही थे ऐसे उदारमना आचार्य स्वदेश जी महाराज से मैंने इस विषय में व्यापक चर्चा की थी तो दोनों ही ने मुझे प्रसन्नतापूर्वक प्रोत्साहित किया। श्रद्धेय आचार्य स्वदेष जी तो सर्वात्मना मेरे कार्यों का प्रसार–प्रचार उस स्थिति में कर रहे हैं, लोगों से सहयोग की अपील सर्वत्र करते हैं, जबकि उनका वेदमन्दिर स्वयं संकटग्रस्त है, यह अति महानता का परिचायक है जिससे मैं बहुत अभिभूत हूँ। स्वामी धर्मबन्धु जी महाराज भारत के प्रसिद्ध समाजसेवी तथा अति प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व वाले हैं पुनरपि मुझसे निकट मित्रता रखते हैं, यह उनकी उदारता है। उनका कार्य अति विस्तृत है पुनरपि उनसे विशेष सहयोग की अपेक्षा है एवं वर्तमान में भी कर रहे हैं। आर्यजगत् के विद्वानों में कई विद्वान् प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेण मेरे कार्यों के प्रशंसक व अनुमोदक हैं। उनमें से कुछ प्रमुख हैं–1. श्री आचार्य वेदव्रत जी मीमांसक (आन्ध्र) 2. श्री आचार्य उदयन जी (आन्ध्र) 3. श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती (उड़ीसा) 4. श्री डॉ. सोमदेव जी शास्त्री (मुम्बई) 5. श्री डॉ. भवानीलाल जी भारतीय (जोधपुर) 6. श्री महात्मा प्रेमप्रकाश जी (पंजाब) 7. श्री डॉ. महावीर जी अग्रवाल (गुरुकुल कांगडी) 8. श्री स्वामी रामदेव जी (हरिद्वार) 10. श्री डॉ. वरुण मुनि जी वानप्रस्थ (कोटा) 12. श्री डॉ. रघुवीर जी वेदालंकार (दिल्ली) 13. श्री डॉ. कृष्णलाल जी (दिल्ली) 14. श्री डॉ. महावीर जी मीमांसक (दिल्ली) 15. श्री

आचार्य बलदेव जी महाराज (हरियाणा) 16. श्री आचार्य राजसिंह जी (दिल्ली) 17. श्री डा. जयदत्त जी उप्रैती (उत्तरांचल) आदि।

मेरे आर्य जनो! आप सोचेंगे कि इतने बड़े विद्वानों से तो सहयोग स्वरूप डेढ़ वर्ष में बहुत धन मिल गया होगा तो मैं निवेदन कर दूँ कि डेढ़ वर्ष में श्री स्वामी रामदेव जी महाराज के 50 हजार रुपये के सहयोग को छोड़कर अन्यों में से केवल 7 विद्वानों से मात्र 13150/– रुपये के चैक+धनादेश आदि प्राप्त हुये हैं। यह इस कारण लिखना पड़ा है कि आर्य जन कहीं यह न सोचने लगें कि इतने विद्वानों के जुड़ने के पश्चात् अब कमी क्या रहेगी? हां, श्री आचार्य स्वदेश जी व श्री स्वामी धर्मबन्धु जी का ही विशेष सहयोग चल रहा है। आर्य जगत् के एक अति वयोवृद्ध व अद्भुत् विद्यासम्पन्न यशस्वी पूज्य आचार्य श्री विशुद्धानंद जी महाराज (बदायूँ) जिन्होंने वेदार्थ कल्पद्रुम जैसा महाग्रन्थ लिखकर महान् यश कमाया है, ने मेरी पुस्तक की रफ कापी पढ़कर मुझसे मिलने की इच्छा व्यक्त की। मैं जब मार्च 06 में अपने प्रियवर अमित शास्त्री के साथ उनसे मिलने बदायूँ गया तो वे बड़ी आत्मीयता से मिले। भूमण्डल के वेदभक्त, मानवतावादियो, सत्य–विज्ञान–प्रेमियो, विभिन्न सम्प्रदायों के आचार्यो, तथा मेरे प्यारे प्रतिभाशाली युवाओ! ध्यान से सुनो। मैं आपको इस लेख के माध्यम से पिछली शिवरात्रि (ऋषि बोध दिवस) वि. सं. 2062 तदनुसार 26 फरवरी 06 को यज्ञ करते समय एक अश्रुतपूर्व, अभूतपूर्व भीष्म प्रतिज्ञा की थी, उसे बता रहा हूँ। वह प्रतिज्ञा इस प्रकार है– "मैं आगामी दस वर्ष में आप सब वेद भक्तों, विज्ञानानुरागियों, दानवीरों, ऋषि–अनुयायियों के सहयोग, श्रद्धा तथा वयोवृद्ध, तपोनिष्ठ साधु–सन्तों के आशीर्वाद से विकसित देशों के शीर्ष वैज्ञानिकों के समक्ष वेद के वेदत्व अर्थात् ईश्वरीयता व सर्वज्ञानमयता को अवश्य सिद्ध कर दूँगा। यदि किसी प्रकार ऐसा नहीं हो सका तो दो वर्ष तक वेद के नामी विद्वानों से विश्व के वैज्ञानिकों के उन प्रश्नों को रखूंगा जिनका समाधान करने में, मैं असमर्थ रहा हूँगा। यदि वे समाधान कर देते हैं अथवा मुझे ही उनका समाधान सूझ जाता है तो उन वैज्ञानिकों को सूचित करूंगा। यदि कोई समाधान कहीं से नहीं

मिला तो मैं इस नश्वर संसार का स्वेच्छया त्याग कर दूंगा।" मैंने जब आचार्य श्री विशुद्धानन्द जी मिश्र महाराज को अपनी प्रतिज्ञा से अवगत कराया तो उन्होंने बड़ी आत्मीयता व गम्भीर भाव से कहा, "आप अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त करोगे पुनरपि विकल्प अर्थात् संसार त्याग की प्रतिज्ञा नहीं करनी थी।" उन्होंने उनसे मिलने आये एक संस्कृत–प्राध्यापक को मेरे विषय में कहा, **"ये भारत में प्रथम व्यक्ति हैं और जिस दिन इनका लक्ष्य पूर्ण होगा उस दिन ये विश्व के प्रथम व्यक्ति होंगे। यह आर्य समाज तथा वेद का महान् कार्य होगा।"** यद्यपि वेद में विज्ञान के विषय में आर्य समाज के दो मनीषियों ने बहुत प्रयत्न किया था। पूज्य आचार्य भगवद्दत्त जी ने जो विज्ञानपरक पुरुषार्थ किया उसमें इतिहास पक्ष अधिक है। इसी प्रकार अद्‌भुत प्रतिभा के धनी आर्य शिरोमणि युवा विद्वान् पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी एम. ए. ने अल्प समय में आश्चर्यजनक कार्य किया। किन्तु उनके अल्पायु में ही संसार त्याग से बहुत क्षति हुई है, इस क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य की उनमें पर्याप्त संभावनाएं संचित थीं। मैं इन दोनों विद्वानों के प्रति नतमस्तक हूँ।

मुझे आचार्य श्री के आशीर्वादसूचक वाक्यों से बहुत प्रोत्साहन व आत्मबल प्राप्त हुआ है। मैंने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की योजना पर गम्भीरता से विचारा है। मेरा विचार यह है कि इस लक्ष्य प्राप्ति के लिये मुझे अत्यन्त पुरुषार्थ करना होगा। मुझे विश्वस्तरीय आधुनिक विज्ञान (फिजिक्स विशेषतया) तथा वैदिक वाङ्‌मय का स्वयमेव अध्ययन करना होगा। अंग्रेजी भाषा तथा गणित का भी कुछ अध्ययन करना होगा। मैं वेद तथा आर्षग्रन्थों के अनार्ष भाष्यों से सन्तुष्ट नहीं हो पाऊंगा, इस कारण स्वतः ही नयी दिशा बनानी होगी। श्रद्धेय आचार्य स्वदेश जी ने भी मुझे कहा था "आपको भाष्यों, टीकाओं से कुछ सहारा तो मिल सकता है परन्तु आपको स्वयं ही वैज्ञानिक सूक्ष्म चिन्तन व मनन आदि से अपना मार्ग बनाना होगा क्योंकि सभी के आर्ष भाष्य उपलब्ध नहीं हैं।" मैं विद्वानों में अपने विचारों का प्रायः किसी को नहीं देख रहा हूँ, अन्यथा कोई तो मुझसे सम्पर्क करता। यदि मैं किसी विद्वान् से वेद की अपौरुषेयता एवं प्रमाणिकता

पूछता हूँ तो वे तत्काल वेद की अन्तः साक्षी तथा आर्ष ग्रन्थों के प्रमाण देने लगते हैं। मैं ऐसे विद्वानों से विनम्रतापूर्वक निवेदन करता हूँ कि ये प्रमाण देते–देते हमें वर्षों व्यतीत हो गये। ये प्रमाण उस काल में सार्थक थे जब इन प्रमाणों की प्रमाणिकता सर्वमान्य थी परन्तु आज इनकी प्रथम आवश्यकता नहीं है। अब पहिले तो इन स्वतः प्रमाणों को प्रमाणित करने की अनिवार्यता है। उसके पश्चात् ऋषियों के ग्रन्थों को प्रामाणिक सिद्ध करने की अनिवार्यता होगी। आज इन्हें स्वतः वा परतः प्रमाण हृदय से कौन मानता है, क्या आपने कभी सोचा? मेरे विद्वज्जनो! आज गहराई से विचारो। अन्दर झाँक कर देखो। अपने युवा पुत्र–पुत्रियों के अन्तःकरण को झांक कर देखो, तो आप पायेंगे कि आपकी सन्तान स्वयं पाश्चात्य चकाचौंध में पगलायी इन्हें प्रमाण नहीं मानती है। वे विज्ञान व 21 वीं सदी के भूतरोग से ग्रस्त होकर वेदादि शास्त्रों के मन व आत्मा से पक्के विरोधी बन चुके हैं। हाँ, उनका विरोध का स्वर अभी बाहर प्रकट विशेषतः नहीं हुआ है। वे अन्दर से अमरीकी, जर्मन, फ्रैंच, अंग्रेज वा जापानी भक्त तथा सिनेसितारे वा खिलाड़ियों के उपासक बन गये हैं। वे बाहर से भले ही यज्ञ व संध्या की औपचारिकता में (यदि आप करते हैं तो) सहयोगी बन जाते हैं परन्तु उनके अन्दर भयंकर राक्षस पाश्चात्य उपभोक्तावादी कुसभ्यता का बैठा है। यह राक्षस रावण, दुर्योधन, दुःशासन वा शूपर्णखा से भी अधिक पापी व भयंकर है। आप ईसाई, मुसलमानों, कामरेडों को ही वेद वा धर्म का विध्वंसक मानने का भ्रम पाले हैं। याद रखो आपका यह भ्रम आगामी वर्षों में आपकी अकर्मण्यता व अनार्यता के कारण टूटने वाला है, यदि आपने अभी से वेद की प्रामाणिकता को बचाने का गम्भीर प्रयत्न नहीं किया तो वह दुर्दिन दूर नहीं है, जब आपकी दम्भी सन्तान आप पर व्यंग करेगी तथा आप स्वयं को वेद–शास्त्रों से विमुख कर देगी। मेरे विद्वान् मित्रो! मैं आपको पूछता हूँ यदि आपको किसी मुसलमान, ईसाई, नास्तिक या वैज्ञानिक से वेद की अपौरुषेयता वा प्रमाणिकता पर शास्त्रार्थ करना पड़े तो क्या आप उसे वेद वा आर्षग्रन्थों के प्रमाण देंगे यदि हाँ, तो क्या उसके साथ न्याय होगा और क्या इसे वह मानेगा? मैं समझता हूँ कि आप अपनी

युक्तियों से ही अपना पक्ष सिद्ध करने का प्रयास करेंगे जैसेः—

1. सृष्टि के आदि में ईश्वर द्वारा ज्ञान देना अनिवार्यता है, एतदर्थ आप विकासवाद का खण्डन करेंगे।
2. ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के आदि में ही होना चाहिए ऐसा सिद्ध करते समय आप कुरान आदि की अर्वाचीनता सिद्ध करते हुए उसको पौरुषेय सिद्ध करेंगे। इसके साथ वेद की सनातनता सिद्ध करने का प्रयास करेंगे।
3. ईश्वरीय ज्ञान उस भाषा में होगा जो सबकी मूल हो, यह सिद्ध करने का प्रयास करते हुए वेद भाषा को मूल सिद्ध करने का प्रयास करेंगे।
4. ईश्वरीय ज्ञान में किसी देश या मनुष्य का इतिहास नहीं होगा, ऐसा सिद्ध करने का प्रयास करते हुए कुरानादि का खण्डन तथा वेद का मण्डन करने का प्रयास करेंगे।
5. ईश्वरीय ज्ञान में विज्ञान, बुद्धि एवं सृष्टि क्रम विरुद्ध कुछ नहीं होगा ऐसा सिद्ध करते हुए बाईबिल आदि का खण्डन करते हुए वेद की ईश्वरीयता सिद्ध करने के लिए आधुनिक विज्ञान द्वारा किये आविष्कारों, सिद्धान्तों वा परिकल्पनाओं को वेद में दिखाने का प्रयास करेंगे।
6. 'वेद' शब्द के अनेक निर्वचन या व्युत्पत्तियों के द्वारा अर्थ करके वेद का प्रामाण्य सिद्ध करने का प्रयास करेंगे।

प्रिय बन्धुवर! मैं आपको पूछना चाहता हूँ।

1. सृष्टि–आदि में ईश्वरीय ज्ञान की अनिवार्यता अनेक तर्कों द्वारा सिद्ध होने के उपरान्त भी वह ज्ञान वेद की चार संहिताओं में ही लिपिबद्ध है, यह सिद्ध कैसे हो सकेगा?
2. ईश्वरीय ज्ञान की प्राचीनता के लिए अनेक प्रमाण देकर भी यह कैसे सिद्ध करेंगे कि ये चार संहिताओं में दिये मन्त्रसमूह की उत्पत्ति ही सृष्टि के आदि में हुई थी। यदि कुरान, बाइबिल आदि सबकी अपेक्षा वेद प्राचीन सिद्ध हो जायेगा तब भी इसकी आयु 1960853107 वर्ष सिद्ध करना सहज बात नहीं होगी।
3. वेद की भाषा सब भाषाओं की मूल होने पर भी इन मन्त्र समूहों में

ऐसा कौन सा वैशिष्ट्य सिद्ध करेंगे जिसका रचयिता स्वयं सृष्टि–कर्ता ही हो सकता है। हजारों ऋषि मिलकर भी इसकी रचना नहीं कर सके।

4. कुरान, बाइबिल में इतिहास की कहानियाँ बतलाकर उनको अपौरुषेयत्व का खण्डन करने मात्र से वेद का अपौरुषेयत्व कैसे सिद्ध होगा? वेद के सूक्तों, अध्यायों, मण्डलों तथा मन्त्रों की परस्पर संगति, पूर्ण वैज्ञानिकता आदि को सिद्ध करने के लिए विशेष क्या प्रयास किया जायेगा?
5. कुरान, पुराण, बाईबिल आदि की सृष्टि व विज्ञान विरुद्ध कल्पनाओं का उपहास करने से वेद की वैज्ञानिकता कैसे सिद्ध होगी? वेद में कुछ यन्त्रादि के नाम और संकेत मिलने से वेद अपौरुषेय सिद्ध कैसे होगा? क्या सभी मन्त्रों की वैज्ञानिकता की परख हमने कर ली है, जो उसको सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान का मूल, घोषणा पूर्वक बतलाते हैं।
6. वेद की व्युत्पत्ति और निर्वचन पर सुन्दर व्याख्यान देकर भी वह वेद इन चार संहिताओं का ही नाम है ऐसा सिद्ध कैसे होगा?

मेरे बन्धुओ! कुछ विज्ञान बुद्धि वाले आधुनिक व्यक्ति प्रायः प्रश्न करते हैं कि वैदिक लोग एक सुई तक न बना सके और प्रतिज्ञा यह करते हैं कि आधुनिक विज्ञान अभी बहुत अधूरा है, और हमारा वेद सम्पूर्ण विज्ञान है। अन्य भी प्रश्न करते हैं। इन प्रश्नों का सामना मुझे वैज्ञानिक मण्डली में रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर में जुलाई 2005 में करना पड़ा। एक वैज्ञानिक ने मुझसे कहा, "संस्कृतज्ञ और वैदिक लोग नकल करने में बहुत चतुर होते हैं। जो भी आधुनिक विज्ञान बड़ा आविष्कार करता है। उसे ही वेद में ढूँढ़कर दिखाकर कहते हैं कि हमारे वेद तथा ऋषि ग्रन्थों में यह पहले से ही विद्यमान है। आज तक आप लोगों ने कोई नया आविष्कार करके नहीं बताया है।" इसका उत्तर मैंने तो यह कहकर दिया, "श्रीमान्! मैंने अपनी पुस्तक में आपके विज्ञान की कहीं नकल नहीं की बल्कि आपके प्रसिद्ध सिद्धान्तों की भूलें दर्शाकर उनका समाधान अपने मस्तिष्क तथा वैदिक विज्ञान से दिया है। जो संसार में अन्यत्र नहीं

मिलेगा।" मेरे उत्तर से वे भौचक्के रह गये। वहीं पर पद्मभूषण से सम्मानित अन्तर्राष्ट्रिय वैज्ञानिक प्रो. अजीतराम जी वर्मा को भी मैंने वेदज्ञों, साधु–सन्तों पर व्यंग करते देखा। "आप लोग व्यर्थ के केवल प्रश्न ही करते हैं जैसे बिग बैंग से पूर्व क्या था, उससे पूर्व क्या था———। इन प्रश्नों का कोई अर्थ नहीं है। प्रश्न करने में कुछ खर्च नहीं होता है।" उस वैज्ञानिक मण्डली के मध्य मैंने तत्काल यह उत्तर दिया "मान्य प्रो. साहब! मैं आपसे प्रश्न करने नहीं आया हूँ कि बिंग बैंग से पूर्व क्या था, बल्कि उत्तर देने आया हूँ कि बिग बैंग सिद्धान्त क्यों गलत है? मैं यह बताने आया हूँ कि न केवल बिग बैंग से पूर्व क्या था बल्कि सबसे पूर्व क्या था?" तब उन्होंने आश्चर्यचकित होकर मुझ साधुवेशधारी से कहा कि मैं आपकी पुस्तक अवश्य पढूंगा। बन्धुओ! यह बात भी ध्यातव्य है कि मैं वैज्ञानिकों व आधुनिक विज्ञान का विरोधी नहीं हूँ बल्कि मैं उन्हें सत्येच्छु तथा अपना सदैव मित्र मानता हूँ। उनकी साधना को नमन भी करता हूँ परन्तु मैं अपनी बुद्धि को ताला लगाकर अंधानुकरण भी नहीं करता हूँ।

मान्यवर बन्धुओ! बड़े वैज्ञानिकों तथा वैज्ञानिक संस्थानों के बीच जब मैं आप लोगों को नहीं देखता व सुनता हूँ, तब बहुत दुःख होता है। हम अपने घर में ही बैठकर विश्व को चुनौती देते हैं अथवा परस्पर एकदूसरे की प्रशंसा करके तृप्त होते हैं। इससे कुछ होने वाला नहीं। मुझे बड़े–बड़े वैज्ञानिक तो महत्व दे रहे हैं परन्तु सम्भवतः आपकी दृष्टि में, मैं नितान्त अयोग्य और अज्ञानी हूँ। मेरे पास न तो कोई शिक्षा उपाधि है न कोई पद, मठ, धन और ऐश्वर्य है, फिर क्यों महत्व मिलेगा? आज सर्वत्र इसी की तो प्रतिष्ठा है। इसी चकाचौंध में सम्पूर्ण आर्यजगत् वा हिन्दू कहाने वाला समाज आज भ्रमित दिखाई दे रहा है। कोलकाता के एक स्वाध्यायशील विद्वान् ने मुझे फोन पर कहा कि प्राणायाम पर शोध करो तो अच्छा रहे। उदयपुर के एक सिद्धान्तनिष्ठ स्वाध्यायशील आर्यसमाजी ने कहा स्वामी रामदेव जी आधुनिक पतंजलि है उन्हीं के साथ लग जाओ। किसी ने कहा यन्त्र बनाओ, किसी ने कहा कि यज्ञ विज्ञान पर शोध करो। मैं इस प्रकार वाले के विचारवाले सभी महानुभावों से

अनुरोध करूंगा, कि स्वामी रामदेव जी ने चिकित्सा क्षेत्र में निश्चित ही एक क्रान्ति खड़ी की है, यह सत्य है। इससे लाखों लोगो को लाभ भी हुआ है व हो रहा है। मैं स्वयं भी कुछ लाभान्वित हुआ हूँ। हाँ, महाप्रमादी, आलसी, पेटू व विलासी लोगों को इससे अधिक लाभ इसलिये होता है क्योंकि वे हाथ–पैर हिलाना तो प्रारम्भ कर देते हैं और प्रतिदिन कुछ श्रम करना सीख गये हैं। परन्तु यही कार्य पूर्ण तथा अंतिम नहीं है। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है वेद की समस्त सत्यविद्याओं का प्रकाश, जिससे विश्व का सर्वांगीण विकास संभव हो सके तथा सभी मनुष्य ईश्वर की सत्ता व महत्ता का अनुभव करते हुए सदाचार में प्रवृत्त हो सकें। आज कितने उपदेशक, धर्माचार्य सत्य को सत्य, असत्य को असत्य तथा पापी को पापी कहने का साहस कर सकते हैं? कितने ऐसे हैं जो वेदादि शास्त्रों की मर्यादा का पालन करते हुए उन्हीं का उपदेश मात्र करते हैं? जो ऐसे हैं वे निश्चित ही बड़े पुण्यात्मा हैं, चाहे वे कितने ही दुःखी या निर्धन क्यों न हों? बन्धुओ क्षमा करो, सत्य–धर्म तथा विज्ञान, ये भीड़, धन या यश से प्रमाणित नहीं होते। दुनिया के सारे लोग मिलकर भी सूर्य को अन्धकार करने वाला सिद्ध नहीं कर सकते। वह जैसा है वैसा ही रहेगा। हम एलुमिनियम के दोषों को दर्शाते हुए पीतल के गुणों को बतलाकर एलुमिनियम का बहिष्कार तथा पीतल के पात्रों का उपयोग कराकर लोगों का भला करें यह धर्म का कार्य है परन्तु पीतल को सोना बतलाकर ऐसा करना सोने से सदैव दूर रखने जैसा ही घोर कुकर्म होगा।

मेरे प्यारे भाइयो। मैं सस्ते, लोकप्रिय साधनों से जुटी भीड़, प्रतिष्ठा व धन से किञ्चिद् भी प्रभावित नहीं होता। इन मीठे प्रतीत होने वाले प्रचार से शिष्य मण्डली बनाकर यश, धन तो प्रभूत मात्रा में अर्जित किया जा सकता है परन्तु इससे ऋषिभक्त, वेदानुरागी तथा सच्चे ईश्वर भक्त नहीं बनाये जा सकते। मैं नहीं चाहता कि लोग मेरे भक्त बनें, मेरी पूजा वा प्रशंसा करें बल्कि मेरी इच्छा है कि संसार के मानव केवल और केवल वेद (सत्य धर्म व विज्ञान का स्रोत) के ही भक्त, एकमात्र ईश्वर के उपासक तथा तपोनिष्ठ विश्वहितैषी ऋषि–मुनियों, शंकर, ब्रह्मा, विष्णु,

इन्द्र आदि देवों तथा भगवान् मनु, श्रीराम, श्रीकृष्ण जैसे महामानवों के ही अनुयायी बनें, इसी से मेरी सम्पूर्ण मनोकामनायें पूर्ण हो जायेंगी। और इससे ही संसार की शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक व आर्थिक उन्नति होगी और वह भी स्थायी रूप से होगी। मैं तो यह मानता हूँ कि यदि लाखों आर्यों के बलिदान से भी ऋषि दयानन्द के स्वप्नों का वैदिक स्वर्ग विश्व (रामराज्य), चक्रवर्ती व जगद्गुरु भारत बन सके तो भी सस्ता है, फिर मेरे अकेले के बलिदान का तो मूल्य ही क्या है? यह तो हुयी योगा की चर्चा, अब अन्य सुझावों पर अपने विचार रखता हूँ।

कोई यन्त्र बनाना यद्यपि वेद–विज्ञान का ही उत्तम प्रदर्शन होगा परन्तु मैं सोचता हूँ, कि इससे भी वेद का अपौरुषेयत्व सिद्ध नहीं हो पायेगा। संसार इतना तो मान लेगा कि वैदिक ऋषि भी वैज्ञानिक थे परन्तु यह सिद्ध करने मात्र से वेद का स्वतः प्रमाणत्व सिद्ध नहीं हो पायेगा। हम भी आधुनिक वैज्ञानिक ग्रन्थों को स्वतः प्रमाण नहीं मान सकते। मेरा प्रथम लक्ष्य वेद के अपौरुषेयत्व को विश्व को बता देना है उसके पश्चात् मैं न सही तो अन्य विद्वान् वर्तमान टैक्नोलॉजिस्टों के साथ मिलकर इस दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं।

यज्ञविज्ञान द्वारा वृष्टि करना व रोकना, मानव, पशु व वनस्पतियों की चिकित्सा करके जनकल्याण के क्षेत्र में क्रान्ति मचाई जा सकती है। अकाल, बाढ़, तूफान, रोग आदि को दूर करने में सम्भवतः बहुत सफलता मिल सकती है परन्तु इस हेतु मुझे वैदिक वाङ्मय के साथ रसायन विज्ञान, मौसम विज्ञान, पर्यावरण–विज्ञान, कृषि–आयुर्वेद आदि का भी गहन अध्ययन करना होता। मेरी इस दिशा में कार्य करने की इच्छा भी बहुत थी परन्तु निम्न कारणों से मैं इस ओर प्रवृत्त नहीं हो सका।

1. रसायन विज्ञान में मेरी रुचि प्रारम्भ से ही कम रही।
2. आज उपभोक्तावादी, विलासी राक्षसी कुसभ्यता ने पर्यावरण (जल, वायु, भूमि आदि) को नष्ट–भ्रष्ट कर डाला है। कोई भी आज अपनी विलासिता को छोड़ना नहीं चाहता। ऐसी दशा में यज्ञ के द्वारा पर्यावरण को पूर्ण स्वस्थ बना कर उपर्युक्त आपदाओं को दूर करना
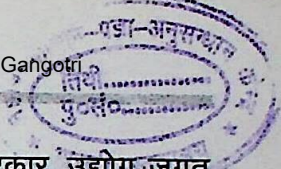
असम्भव सा प्रतीत होता है। इस हेतु जनता, सरकार, उद्योग जगत्, कृषक सभी को तपोनिष्ठ बनने का संकल्प लेना होगा, परन्तु ऐसा होना नितान्त असम्भव लगता है।

3. इस कार्य में करोड़ों का व्यय प्रयोगों में ही हो जायेगा फिर व्यापक स्तर पर कार्य हेतु तो खर्च की सीमा नहीं है। तथाकथित सैक्यूलर शासन से सहयोग की आशा ही नहीं है। फिर उपरिवर्णित कारणों से परीक्षण असफल हुये तो अपयश फैलाने वालों तथा वेद विरोधियों की बन आयेगी।
4. इसकी सफलता से भी वेद का वेदत्व पूर्णतः बच नहीं पायेगा। ऋषियों की वैज्ञानिकता तो सिद्ध हो सकेगी परन्तु वेद के स्वतः प्रामाण्य पर प्रश्नचिह्न फिर भी रहेंगे।
5. यज्ञ पर शोध हेतु सर्वप्रथम गौ की रक्षा करनी होगी। इसके अर्थशास्त्र को सिद्ध करके गौ–संवर्धन करना होगा तभी गोघृत की उपलब्धता हो सकेगी। डेयरी अथवा भैंस के दूध से यज्ञ–शोध सफल कभी नहीं हो पायेगा। आज इस अभागे देश में गाय को बचाना और उसका संवर्धन करना कोई सरल कार्य नहीं है।

इन पाँच कारणों से मैं इस दिशा में प्रवृत नहीं हुआ। मैं सोचता हूँ कि आज जब वेद पर ही भारी संकट है तब अन्य का क्या कहा जाये? मेरा मानना है कि यदि वेद को संसार ने अपौरुषेय व स्वतः प्रमाण मान लिया तो फिर वेद की सभी विद्यायें जैसे, गौ विज्ञान, यज्ञ–विज्ञान, योग, अर्थशास्त्र, सामाजिक व राजनैतिक व्यवस्थायें आदि को बचाया जा सकेगा और यदि वेद नहीं बचा तो कुछ भी नहीं बच पायेगा। अब प्रश्न यह है कि वेद का अपौरुषेयत्व कैसे सिद्ध होवे? किसी भी आर्ष वा वैदिक प्रमाण से वेद को ऐसा सिद्ध करना सम्भव नहीं तथा किसी विज्ञान विशेष को भी वेद में सिद्ध करने से भी वेद की ईश्वरीयता (अपौरुषेयता) सिद्ध नहीं हो पायेगी, ऐसी स्थिति में क्या किया जाये? मैंने इस पर बहुत विचार किया कि क्या सम्पूर्ण वैदिक आर्ष वाड़्मय में कोई ऐसा प्रमाण नहीं है जिसे विश्व का कोई भी व्यक्ति विचार करने व मानने योग्य स्वीकार करे।

मुझे ब्रह्मसूत्र का एक सूत्र 'तत्तुसमन्वयात्' (1/1/4) मिला। इस पर विचार किया तो बड़ा आनन्द हुआ। ब्रह्मसूत्र के रचयिता भगवत्पाद महर्षि व्यास जी महाराज के सम्मुख प्रश्न आया कि कैसे मानें कि वेद का रचयिता ब्रह्म ही है तो उन्होंने इस सूत्र को लिखकर कहा कि यह तो इस बात से सिद्ध होता है कि इस सम्पूर्ण सृष्टि–विज्ञान पर तथा वैदिक विज्ञान पर विचार करें तो दोनों में पूर्ण समन्वय दिखाई देता है अर्थात् इस सृष्टि की रचना तथा वेद में दिये एतद्विषयक ज्ञान में कोई भिन्नता नहीं है। इस बात से ऐसा सिद्ध होता है कि दोनों का रचयिता एक ब्रह्म ही है जिसने अपना ज्ञान वेद में बतलाया और उसके प्रयोग से ही सृष्टि रचना की। जिस प्रकार सृष्टि रचना किसी जीव द्वारा सम्भव नहीं है उसी प्रकार उसके पूर्ण व सत्य ज्ञान का उपदेश भी वही ब्रह्म दे सकता है।

मेरे बन्धुओ! ऋषिराज व्यास के सम्मुख दोनों विज्ञान स्पष्ट थे परन्तु आज हम केवल सूत्रार्थ रट–रटा कर इतिश्री समझ रहे हैं। हमें सृष्टि–विज्ञान का हजारवाँ, लाखवाँ भाग पता नहीं फिर भी वेद और सृष्टि के समन्वय का दावा अपने अध्यापन, व्याख्यान वा लेखन में कर देते हैं। मैं अनुभव करता हूँ कि आधुनिक विज्ञान भले ही परिवर्तन का विकल्प खुला रखता है और यह इसकी उदारता, मस्तिष्क के खुलेपन, असत्य त्याग व सत्य ग्रहण की तीव्र इच्छा, तथा विनयशीलता का ही प्रतीक है और हम सब धर्माचार्य कहाने वाले तथा वैदिक विद्वानों के लिये अनुकरणीय भी है पुनरपि इस विज्ञान को स्वतः प्रमाण मान कर वेद में खोजने का यत्न करना महती भूल होगी। परन्तु स्मरण रहे कि प्रयोगों द्वारा सतत् विकसित होते विज्ञान का उपहास वा उपेक्षा करना भी घोर नादानी होगी। यह विज्ञान हमारा विरोधी नहीं बल्कि हमारा अन्तरंग मित्र है। वैज्ञानिक हमारे परमहितैषी तथा आदरणीय हैं। हमें सृष्टि–रचना–विज्ञान का आधुनिक पक्ष जानने हेतु कॉस्मोलोजी, पार्टिकल–न्यूक्लियर–एटॉमिक फिजिक्स, भूविज्ञान आदि का गम्भीर अध्ययन करना होगा। प्राणी व वनस्पति रचना जानने हेतु प्राणि–विज्ञान, वनस्पति–विज्ञान व मौसम विज्ञान का भी अध्ययन अपेक्षित है। इसके साथ वैदिक विज्ञान इस विषय

में क्या कहता है? दोनों में क्या भेद है व क्या समानता है? यह जानना होगा। हम आधुनिक विज्ञान की गहराइयों में जाकर उसमें हो रहीं त्रुटियों का ज्ञान वैज्ञानिकों को करायें। याद रहे, त्रुटियाँ निकालने से ही बात नहीं बनेगी। हमें उन त्रुटियों का समाधान वैदिक विज्ञान से बिन्दुशः देना होगा। हमें वेद को रहस्यमयता के जाल से मुक्त कर वैदिक अवधारणाओं, संज्ञाओं को आधुनिक विज्ञान की भाषा में स्पष्ट करने का प्रयास करना होगा। हमें कूपमण्डूकता की प्रवृत्ति को त्यागना होगा। हमें उस भाषा में संसार को अपना विज्ञान समझाना होगा, जिसे संसार समझता है। मैं अपनी पुस्तक पर तथा अन्य प्रसंगों में आज कई प्रकार की प्रतिक्रियाओं को सुनता हूँ–

1. सृष्टि पर कोई क्या खोज करेगा? सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में सब लिखा हुआ है।
2. प्रकृति (उपादान कारण) पर क्या कोई लिखेगा? सब जानते हैं कि सत्व, रजस् तथा तमस् की साम्यावस्था को प्रकृति कहते हैं।
3. आधुनिक वैज्ञानिकों को ईश्वर व जीव का ज्ञान तो है ही नहीं तथा प्रकृति का भी अधूरा ज्ञान है। इस प्रकार उन्हें हमारी अपेक्षा 1/6 भाग का ही ज्ञान है।
4. हमारी यज्ञ प्रक्रिया में समूचा–सृष्टि–विज्ञान भरा हुआ है।

मान्यवर! मैं (1) प्रथम प्रतिक्रिया पर निवेदन करूँगा कि क्या कोई महानुभाव सत्यार्थप्रकाश वा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के सृष्टि प्रकरणों को पूर्णतया समझने का दावा कर सकता है? यदि हाँ, तो क्या वह इसके आधार पर किसी उच्च कोटि की प्रयोगशाला में बैठकर कुछ प्रयोग करने का साहस रखता है? यदि नहीं तो व्यर्थ दावों से कुछ होने वाला नहीं है। (2) 'सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः!' इस सांख्य सूत्र के पढ़ने–पढ़ाने वा प्रवचन करने वाले महानुभाव विद्वान् क्या सत्व, रजस् तथा तमस् के विषय में विस्तार से अपनी अवधारणायें स्पष्ट करेंगे? उनकी साम्यावस्था की व्याख्या आधुनिक विज्ञान की भाषा में करने की इच्छा करेंगे? (3) हम स्वयं को प्रकृति विषय में भी आधुनिक वैज्ञानिकों से दोगुना ज्ञानी

होने का दावा करते हैं। हम शब्द के अर्थ पर अर्थ करते जाकर लम्बे–लम्बे व्याख्यान देते रहते हैं परन्तु आज तक सत्व, रजस्, तमस् को उचित परिभाषा भी नहीं दे सके हैं। सत्वादि का तो क्या कहें, पृथिव्यादि महाभूतों को भी नहीं समझ सके है और जिन्हें हम अज्ञानी वा अपूर्ण ज्ञानी कहकर उन पर व्यंग करते है, वे वैज्ञानिक इलोक्ट्रोनिक्स आदि क्षेत्रों में क्रान्ति मचा रहे हैं। आकाश की दूरियों को नाप रहे हैं। उनके प्रयोगों से हम ज्ञानी बनने वाले भी सगर्व लाभ उठा रहे हैं, फिर भी विज्ञान की आलोचना कर रहे हैं। बातों की इस जादूगरी से वेद की प्रामाणिकता सिद्ध होने वाली नहीं है। हाँ, हम उपेक्षा तथा उपहास के पात्र अवश्य हो गये हैं।

हम 'गौ' शब्द की व्युत्पत्ति व निर्वचन बड़े पाण्डित्यपूर्ण ढंग से करते हैं परन्तु आज तक "गो" नामक पशु को प्राप्त तक नहीं कर सके और यह भी स्पष्ट नहीं' कर पाते कि गो पशु की ठीक–ठीक पहिचान क्या है? तब दूध तो कहाँ मिले? उधर जो 'कॉउ' शब्द की व्याख्या नहीं करते फिर भी उस कॉउ को पकड़ कर दूध, मक्खन खा रहे हैं और हमें भी खिला–पिला रहे हैं। हम उनका दिया हुआ खाते–पीते हुये भी उन्हें अपूर्ण ज्ञान वाला बता रहे हैं। दम्भ की यह कैसी पराकाष्ठा है?

(4) क्या कोई विद्वान् महानुभाव मुझे समझाने की कृपा करेंगे कि किस प्रकार यज्ञ–प्रक्रिया में सृष्टि विज्ञान भरा हुआ है?

मेरे आदरणीय बन्धुओ! मैं समझता हूँ कि अब मेरे विचारों से आप समझ गये होंगे कि मैं जिस कार्य को कर रहा हूँ वह मूल को बचाने जैसा कार्य है। इस हेतु मुझे अपना तन–मन–आत्मा का पूर्ण समर्पण करना होगा। मुझे वैदिक वाङ्मय तथा आधुनिकतम विज्ञान का स्वयं ही अध्ययन करना होता है। इस सबके साथ स्वास्थ्य को वर्षों से सम्भाल कर रखता हूँ। शरीर के साथ अनेक दुर्घटनायें घटी हैं। इधर किराये के भवन में दो वैतनिक व्यक्तियों के साथ रहता हूँ। आर्य समाज की संस्थाओं तथा अपवाद के अतिरिक्त विद्वानों, संन्यासियों, दानवीरों का कोई भी सहयोग नहीं मिल रहा है। हमारे यहाँ भवनों, उत्सवों, अन्य प्रदर्शनों तथा पारस्परिक

विवादों पर कितना ही व्यय होता है परन्तु पता नहीं क्यों इस नींव के कार्य के लिये धन का सहयोग मिल ही नहीं रहा। क्यों बड़े–बड़े सिद्धान्तव्याख्याता मेरे मित्र यहाँ मुझसे दूरी बनाये हैं? मुझे एक वैज्ञानिक सहायक चाहिये जो भौतिक विज्ञानों के अध्ययन में मेरी सहायता कर सके। अन्य अंग्रेजी भाषाविद् आदि भी चाहिये जिससे में अपने इस कार्य को समय से पूर्व ही पूर्ण कर सकूँ।

मैं सभी वेद व ऋषिभक्त आर्यों, सनातनी कहलाने वाले पौराणिकों! देव ऋषि संस्कृति पर गर्व करने वाले भाइयों, आधुनिक विज्ञान के अध्यापक व अध्येताओं, तथा मानवता व सत्य–न्याय–करुणा की बात करने वाले मित्रों से निवेदन करता हूँ कि आप सभी महानुभाव मेरे इस लेख को पढ़कर मेरी अन्तर्वेदना को पहिचानने का प्रयास करें। मुझसे मेरे परिचितों का कहीं मतभेद भी हो सकता है परन्तु मनभेद करना मेरा कार्य कभी नहीं रहा। मैं तो सत्य–ग्रहण तथा असत्य–परित्याग की प्रतिज्ञा के साथ ईसाई, मुसलमानों से भी मतभेद मिटाने तथा मानवता की रक्षा हेतु शास्त्रार्थ, लेखन व संवाद करता रहा हूँ तब आर्य समाज वा पौराणिक तो वेद के निकट ही हैं। आर्य समाजी तो एक गुरु ऋषि दयानन्द के शिष्य हैं फिर उनमें विवाद कहाँ रह गया? कहीं कुछ स्वार्थ, हठ, वा दूषित भावनायें ही इसका कारण हो सकती हैं। आओ! मेरे भ्राताओ! सत्य को ग्रहण कर हठ, दुराग्रह, स्वार्थ तथा दूषित भावों को त्याग कर मेरे कार्य में सहयोगी बन कर अपने कर्तव्य का निर्वहन करो। मैं सबका ही सहयोग चाहता हूँ। संसार का प्रत्येक व्यक्ति मेरा है क्योंकि सभी एक पिता की संतान हैं। हां, उसे भी ऐसा समझना होगा।

बन्धुओ! एक बुद्धिमान युवक जो हमारे यहाँ कार्यालय प्रमुख के रूप में सितम्बर, 05 में नियुक्त हुआ था, हमारे कार्य व लक्ष्य से प्रभावित होकर यहीं स्थायी रूपेण रहकर इसी लक्ष्य में सम्मिलित होने का व्रती बन गया। इस युवक का नाम है 'श्री अमित शास्त्री' जो व्याकरणाचार्य व शिक्षा शास्त्री किये हुये है तथा वाराणसी क्षेत्र का निवासी है। हमने भी इसे सद्गृहस्थ बनकर पितृसेवा करते हुये कार्य करने व वांछित अध्ययन

की प्रेरणा दी है। इसे मन्दिर के उपाचार्य पद पर नियुक्त किया है। इस युवक के परिवार के दायित्वों के निर्वहन का न्यास ने वचन दिया है। अभी यह नया है। मुझे अपने विचारों, अध्ययन–चिन्तन शैली आदि से इसका नव निर्माण करना होगा। इसे भी श्रद्धा व निष्ठा के साथ गम्भीर होकर नये सिरे से अध्ययन का पुरुषार्थ करना होगा। तब आशा करता हूँ कि यह विद्यार्थी आगे चलकर मेरे कार्य में सहायक बन सकेगा। यदि मैं अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल रहा तो यह प्रिय अमित भी इस लक्ष्य पर चलकर एक महान् कार्य करने में समर्थ हो सकेगा। इसका मार्ग स्पश्ट होगा। आगे की पीढ़ी को यह मार्ग बहुत लाभदायक रहेगा। यदि मैं पूर्ण सफल न रहा तो भी संसार छोड़ने से पूर्व इतना मार्ग अवश्य बना जाऊंगा कि यह अमित तथा अन्य प्रतिभाशाली एवं पुरुषार्थी विद्वान् वेद की प्रमाणिकता को विश्व को बतला सकेंगे। अन्त में मैं वैदिक जगत् के सभी मूर्धन्य संन्यासियों, योग्य विद्वानों, वानप्रस्थों, धर्माचार्यों, ब्रह्मचारियों, आदि की सेवा में निवेदन करना चाहता हूँ कि मेरा कार्य वा व्रत आप किसी के भी अच्छे कार्य का विरोधी वा समानान्तर नहीं है। वर्तमान में वेद प्रचार क्षेत्र में जो हो रहा है, उसका भी अपना महत्व है। न केवल आपके कार्य बल्कि सामान्य भजनोपदेशक, आर्य वीर दल कार्यकर्ता, अन्य प्रचारकों, कार्यकर्ताओं के साथ पुस्तक विक्रेताओं के कार्य का भी मैं अभिनन्दन करता हूँ। पौराणिक भाइयों में वेद पाठ की परम्परा के निर्वाहकों का भी मैं अभिनन्दन करता हूँ। मेरा यह लेख किसी की भावना को आहत करने के लिये नहीं बल्कि सबको आत्म– चिन्तन करने के लिये प्रेरित करने के लिये है। आप फूल, पत्तियों की साज, सँवार करो वृक्ष के मधुर फल चुनने, खाने व बाँटने की इच्छा करो, मैं जड़ों को सींचने का व्रत ले चुका हूँ। मैं आपकी सुदृढ़ बाड़ बनकर पाश्चात्य वैज्ञानिकता एवं नास्तिकता से रक्षा के लिये कृतसंकल्प हूँ। मैं विज्ञान और अध्यात्म दोनों को मिलाने का व्रत लेकर चला हूँ, जो इस समय परस्पर विरोधी बने हुये हैं। आशा है कि यह महान् कार्य आपके उदार सहयोग से सिद्ध हो जायेगा। मेरा आत्मा अब तक केवल डेढ़ वर्ष के अनुभव के आधार पर यह कहता है कि यदि

आर्थिक वा स्वास्थ्य सम्बंधी बाधायें नहीं आयीं तो मैं अपना लक्ष्य अवश्य प्राप्त करके विश्वभर के वेद भक्तों के सोये स्वाभिमान को जगाने में सफल होऊँगा अन्यथा संसार त्याग करने के लिये किसी का सहयोग चाहिये ही नहीं। हमारे संरक्षक तथा सह संरक्षक महोदय जिस आत्मीयता से कृपादृष्टि बनाये हुये हैं। हमारे समस्त मानद सहयोगी संरक्षक महानुभाव जिस श्रद्धा व स्नेहभाव से इस न्यास के विकास हेतु समुत्सुक हैं। हमारे भामाशाह स्वरूप सभी सहयोगी संरक्षक तथा अन्य सभी दानवीर महानुभाव जिस श्रद्धा से निःस्वार्थ भाव से अपना पावन आर्थिक सहयोग कर रहे हैं। आर्य समाज की भारत भर में अब तक तो मात्र संस्था आर्य समाज विशेषकर महिला आर्य समाज, सैक्टर–7 फरीदाबाद (हरियाणा) तथा आर्य उप प्रतिनिधि सभा, वाराणसी के श्री प्रमोद जी आर्य आदि आर्यजन ही सहयोग के लिये कुछ आगे आये हैं। सम्भवतः भारत की अन्य आर्य संस्थायें इससे प्रेरणा लेंगी। मेरे मित्र आदरणीय ब्रह्मचारी नरेन्द्रजी जिज्ञासु (आजमगढ़) भी सहयोग में अग्रसर हैं। मेरे समस्त प्रिय न्यासी तथा अन्य कार्यकर्तागण जिस श्रद्धा भावना से तन–मन व धन तीनों प्रकार का सहयोग पूर्ण निष्काम भाव से कर रहे हैं और सभी यह आशा कर रहे हैं कि मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त कर के न्यास को यशस्वी बना सकूँ, परमात्म–कृपया आशा है कि उपर्युक्त सभी महानुभावों की वह इच्छा, भावना अवश्य पूर्ण होगी। मेरा कार्य पूर्ण पुरुषार्थ करना है, वह मैं करूंगा, फिर दैवेच्छा बलीयसी। विशेष निवेदन है कि अनेक विद्वान् वा सामान्य कार्यकर्ता मुझे परामर्श देते हैं कि मैं भ्रमण कर–करके अपने कार्य के महत्व को समझाऊं अन्यथा बिना जाने कैसे कोई सहयोग करें? विज्ञप्तियों व पुस्तक के पढ़ने से लक्ष्य की महत्ता सबकी समझ में नहीं आती। मैं ऐसे हितैषी महानुभावों की सेवा में निवेदन करता हूँ कि यदि मैं भ्रमण करके अपने लक्ष्य की जानकारी देने में व्यस्त रहा तो धन भले ही मिल जाये परन्तु अध्ययन में भारी पुरुषार्थ करने में बाधा आ जाने से लक्ष्य प्राप्त करना कठिन हो जायेगा। मेरे सम्मुख कुल 12 वर्ष की समय सीमा है; इसके पश्चात् चाहे मैं किनारे के निकट तक पहुँच जाऊं, तब भी संसार

छोड़ना ही होगा। इस कारण मेरा सभी से निवेदन है कि मेरे इन विचारों का आप सब हितैषी व वेदभक्त जन सर्वत्र प्रचार करें। इन्हें अपनी–अपनी ओर से प्रकाशित करवा कर सबको बाटें, तो आपका बड़ा पुण्य कार्य होगा। जो छपवा न सकें वे यहां से मंगवा कर बाँटें। प्रभु आपको निष्पक्ष, विमल व उदार बुद्धि प्रदान करें तथा मुझे स्वास्थ्य व मेधाबुद्धि प्रदान करें। वयोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्धों का आशीर्वाद मिले, संसार के सभी मानव परस्पर मिलकर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करके एक परिवार की भाँति रहते हुये चिर आनन्द को प्राप्त करें, इसी कामना व भावना के साथ।

माँ मानवता का विनम्र सेवक
आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक (वेद–विज्ञांन गवेषक)
संस्थापक व प्रमुख, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास,
आचार्य, वेद विज्ञान मन्दिर,
भागलभीम, भीनमाल, जिला–जालोर (राजस्थान)

!! ओ३म् !!

न्यास – कार्ययोजना एवं अपील

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास की स्थापना वैशाख अमावस्या वि. सं. 2060 तदनुसार 01 मई 2003 को आर्य समाज के प्रख्यात लेखक व समीक्षक पूज्य श्री आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक ने भारत के प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता, क्रान्तिकारी आर्य सन्त पूज्यपाद श्री स्वामी धर्मबन्धु जी महाराज की प्रेरणा व संरक्षण में भीनमाल, जिला– जालोर (राज.) में की थी। किन्हीं कारणवश न्यास का मुख्यालय– भीनमाल से अस्थायी रूपेण हटाकर पाली–मारवाड़ में एक किराये के मकान में करना पड़ा। वहाँ ग्यारह माह रहने के पश्चात् मुख्यालय भीनमाल में कर लिया। भीनमाल नगर के निकटस्थ ग्राम– भागल–भीम से 2 किमी. दूर रोड़ के किनारे सवा तीन बीघे भूमि क्रय कर ली है। हमारे न्यास के पाँच उद्देश्य हैं। 1.वेदरक्षा अभियान 2.गो–कृषि–पर्यावरण रक्षा अभियान 3.राष्ट्ररक्षा अभियान 4.समाज सुधार अभियान 5.आर्य युवा निर्माण अभियान। वर्तमान में हमारा न्यास सर्वाधिक महत्वपूर्ण वेद रक्षा अभियान के अन्तर्गत वेद तथा आधुनिक भौतिक विज्ञान पर शोध हेतु ही विशेषतया समर्पित है। यह कार्य सबसे महत्वपूर्ण तथा कठिन है। इस प्रकार का कार्य सम्भवतः भारत में अन्यत्र कहीं भी नहीं हो रहा है फिर विश्व में कहॉ हो सकता है? इसके लिये सर्वप्रथम अपना भवन बनाने की आवश्यकता है। अभी भीनमाल नगर में किराये के मकान में अस्थायी कार्यालय है। वेद विज्ञान मंदिर नाम से वेद–विज्ञान–शोध संस्थान भागलभीम में बनाना प्रस्तावित है जिसके लिये कम से कम लगभग 30 लाख रुपयों की तत्काल आवश्यकता है जिसमें शोध कक्ष, आवास कक्ष, यज्ञशाला, गोशाला, कर्मचारी आवास, अतिथिशाला, जल संरक्षण हेतु बड़े हौज आदि निर्माण, चारदीवारी, पुस्तकालय, कम्प्यूटर कक्ष सभा भवन आदि बनाने होंगे। इस समय पूज्य आचार्य श्री के अतिरिक्त दो कार्यकर्ता (उपाचार्य जी तथा सेवक) वेतन पर कार्यरत हैं। श्री आचार्य जी पूर्ण समर्पित व नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं। वर्तमान में कुल खर्च

लगभग 18–20 हजार मासिक चल रहा है। पुस्तकों हेतु लगभग 2–3 लाख रुपयों की आवश्यकता होगी। प्रयोगशाला की आवश्यकता को श्री आचार्य जी अनुभव नहीं करते। उन्होंने इस हेतु भाभा–परमाणु अनुसंधान केन्द्र. मुम्बई के प्रसिद्ध वैज्ञानिक मान्यवर डा. आभास कुमार जी मित्रा से चर्चा की है। भविष्य में उनका विचार विश्व के अन्य वैज्ञानिकों से भी यही चर्चा करने का है कि वे अपने मस्तिष्क तथा वैदिक वाङ्.मय से कुछ ऐसे रहस्यों को खोजकर दें जिस पर वे वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशालाओं में शोध करें। इससे उन वैज्ञानिकों को भी शोध हेतु नये–नये बिन्दु मिलेगें तथा हमारे वेद विज्ञान की प्रमाणिकता को वैज्ञानिक जगत् स्वीकार करेगा। इसके उपरान्त विश्व का प्रबुद्ध वर्ग इसके प्रति आकृष्ट होगा।

मान्यवर! इस समय आचार्य जी अकेले ही वैदिक वाङ्.मय, पाणिनी व्याकरण, निरुक्त आदि के साथ–साथ आधुनिक भौतिक विज्ञान व गणित आदि जो संसार का कठिनतम पाठ्यक्रम है. को स्वयं ही पढ रहे हैं। आपका विचार है कि यदि भौतिक विज्ञान तथा अंग्रेजी भाषा के विद्वान् भी साथ हों, जिन्हें वेतन पर रखा जाये तो उन सबको साथ लेकर चिन्तन की गति अच्छी हो सकती है। इससे लक्ष्य प्राप्ति में शीघ्रता हो सकती है। एतदर्थ हमारी आवश्यकतायें निम्नानुसार हैं–

क्रमाक	विवरण	मासिक व्यय (न्यूनतम लगभग)
1.	2 सेवकों का वेतन	5,000/–
2.	स्नातकोत्तर भौतिकी शोध सहायक	8,000/–
3.	कार्यालय/पुस्तकालय प्रमुख	6,000/–
4.	शोध सहायक–उपाचार्य	8,000/–
5.	विद्युत्, जल, दूरभाष, इण्टरनेट व्यय	10,000/–
6.	अवैतनिक व्यवस्थापक साधु	–
7.	7–8 व्यक्तियों का भोजन, वस्त्र, चिकित्सा आदि व्यय	15,000/–
8.	यज्ञ व गो आदि का व्यय	5,000/–

9. पत्र, पत्रिकायें, स्टेशनरी आदि व्यय 10,000/=
   कुल मासिक व्यय लगभग 67,000/=

उपर्युक्त मासिक व्यय तुरन्त तो नहीं परन्तु धीरे–धीरे आवश्यक हो जायेगा। अभी तत्काल लगभग 40,000 रुपये मासिक तथा भवन व पुस्तकालय हेतु वांछित राशि की विशेष आवश्यकता है। इसके लिये सभी वेदभक्तों (आर्यों वा पोराणिकों), विज्ञान–प्रेमियों, भारतीय संस्कृति पर गर्व करने वाले तथा मानव मात्र के हितचिन्तकों से विनम्र प्रार्थना है कि वे इस महान् कार्य में उदारहृदय से तन–मन व धन से सहयोग करने का अनुग्रह करें व करावें। आपका यह धन इस अतीव पावन ज्ञान–विज्ञान–यज्ञ में ही आहुत होगा जिसमें आचार्य जी ने अपने को सर्वात्मा आहुत कर दिया है और एतदर्थ भीषणतम संकल्प लिया है। हमारे धनी–मानी महानुभाव! जब किसी महान् व्रती ने शरीर के बलिदान जैसा संकल्प कर डाला है, जो इस क्षेत्र को संसार में षायद कभी सुना भी नहीं गया हो, तब आप हम व सबको कम से कम धन की कमी को तो बाधा नहीं बनने देना चाहिये। हम धन दान का व्रत तो लें ही। किन्तु उन लोगों से हमारा विनम्र अनुरोध है, जिनकी आजीविका अण्डा, माँस, तम्बाकू, गुटखा, सिगरेट, बीड़ी, शराब, तस्करी, कत्लखाने आदि अनैतिक साधनों से है, उनसे हम धन लेना स्वीकार नहीं कर सकेंगें। पुनश्च आप हमारे यज्ञ में निम्न प्रकार से सहयोगी बन सकते हैं।

1. प्रतिवर्ष न्यूनतम 12,000/– रुपये अथवा एक बार न्यूनतम एक लाख रुपये का दान करके सहयोगी संरक्षक बन सकते हैं। सभी सहयोगी संरक्षकों को न्यास की वार्षिक बैठक जो प्रायः वार्षिकोत्सव के अवसर पर हुआ करेगी, में विशेष रूपेण आमन्त्रित किया जायेगा। तथा उत्सव में अभिनन्दित किया जाया करेगा। इसके साथ इनका नाम न्यास की विज्ञप्ति तथा वेब साइट में प्रविष्ट रहेगा।

2. प्रतिवर्ष न्यूनतम 6,000/– रुपये अथवा एक साथ न्यूनतम 50,000/– रुपये देकर विशेष आमन्त्रित सदस्य बन सकते हैं। इनको भी

वार्षिकोत्सव के अवसर पर विशेष रूपेण आमन्त्रित किया जाता रहेगा।

3. वार्षिक न्यूनतम 1,000/– रुपये देते रहकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं।

4. अपने नाम से कमरा, यज्ञशाला आदि बनवा सकते हैं। इनका भी वार्षिकोत्सवों पर विशेष सम्मान किया जायेगा।

उपर्युक्त चारों प्रकार के सहयोगी महानुभावों तथा अन्य दानदाताओं की इच्छा पर न्यास द्वारा प्रकाशित साहित्य निःशुल्क भेंट किया जाता रहेगा। जो महानुभाव स्वयं दान नहीं कर सकें वे दूसरों को प्रेरित करके कम से कम 8 सदस्य आदि बनाकर स्वयं निःशुल्क उसी श्रेणी के सदस्य वा सहयोगी संरक्षक आदि बन सकते हैं।)

5. विद्यार्थी, किसान, श्रमिक आदि अपनी पवित्र आहुति श्रद्धा व सामर्थ्य के अनुसार दे सकते हैं। आई. आई. टी. इंजीनियरिंग व विज्ञान के उच्चतर कक्षाओं के छात्र अपना बौद्धिक सहयोग कर सकते हैं।

6. वयोवृद्ध विद्वान् व संन्यासी महानुभाव अपना आशीर्वाद रूपी सहयोग करने की कृपा कर सकते हैं।

कृपया आप अपना चैक/ड्राफ्ट/धनादेश, प्रमुख, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, के नाम (केवल खाते में देय) भेजने का कष्ट करें। न्यास को दिया गया दान आय कर अधिनियम की धारा 80 के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। आपके पावन व उदार सहयोग की आशा के साथ निवेदक

अभिषेक आर्य	पदमसिंह	ऊकसिंह चौहान	जनकसिंह चम्पावत
उपप्रमुख	कोषाध्यक्ष	जनसम्पर्क प्रमुख	मंत्री

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, वेद विज्ञान मन्दिर, भागल–भीम, वाया– भीनमाल, जिला– जालोर (राजस्थान) पिन 343029

न्यास के आधार

1. **संरक्षक** – पूज्य स्वामी धर्मबन्धु जी महाराज
2. **सह–संरक्षक** – पूज्य आचार्य स्वदेश जी महाराज
3. **संस्थापक** – आजीवन – प्रमुख एवं आचार्य – पूज्य आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक
4. **मानद सहयोगी संरक्षकगण** –

   (क) मा. श्रीमान् अर्जुनसिंह जी देवड़ा, विधायक (रानीवाड़ा) एवं उपाध्यक्ष, बीसूका क्रियान्वयन समिति, राजस्थान सरकार, जयपुर।

   (ख) मा. श्रीमान् ठा. समरजीत सिंह जी, विधायक – भीनमाल।

   (ग) मा. श्रीमान् ठा. गोपालसिंह जी, कोरी

   (घ) मा. श्रीमान् जोगेश्वर जी गर्ग, विधायक – जालोर

   (ङ) मा. श्रीमान् नारायणसिंह जी देवल, पूर्व जिला प्रमुख – जालोर

   (च) मा. श्रीमान् जीवाराम जी चौधरी, विधायक – साँचोर

5. **सहयोगी संरक्षकगण** –

   (क) श्रीमान् चौधरी तोरन सिंह जी आर्य, मथुरा

   (ख) श्रीमान् अशोक कुमार जी बंसल, भटिण्डा

   (ग) श्रीमान् रघुवीर सिंह चौधरी (आर्य), मथुरा

   (घ) श्रीमान् वेदमुनि जी वानप्रस्थ, भरतपुर

नाम और पता	पद / व्यवसाय	चल–दूरभाष
1. श्रीमान् आचार्य अग्निव्रत	प्रमुख व आचार्य	09414182173
नैष्ठिक (न्यासी) वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम	वेद एवं विज्ञान शोध	
2. श्री अभिषेक आर्य (न्यासी) निम्बावास, जालोर (राज.)	व्यापारी	09414588785 02969–209057
3. श्री जनक सिंह चम्पावत (न्यासी) जेरण, जालोर (राज.)	अध्यापक	
4. श्री आचार्य अमित शास्त्री, व्याकरणाचार्य व शिक्षा शास्त्री	उपाचार्य (शोध सहायक)	09829148400 02969–209550
5. श्री धीराराम चौधरी, विशाला, जालोर (राज.) (न्यासी)	मैकेनिक	09414397872
6. श्री पदम सिंह चौहान, कुशालपुरा, जालोर (राज.) (न्यासी)	अध्यापक	02969–207746
7. श्री ऊक सिंह चौहान, झाब, जालोर, (राज.) (न्यासी)	अध्यापक	094131209
8. श्री भुवनेश काबरा, पाली, (राज.) (न्यासी)	कम्प्यूटर इंजिनीयर	09829028935
9. श्री धर्मप्रकाश शर्मा, अजमेर (राज.) (न्यासी)	एग्जीक्यूटिव इंजिनीयर	09414202377
10. श्री नटवर नागर, सुमेरपुर पाली (राज.) (न्यासी)	व्यापारी	09414463563
11. श्री ब्र. नरेन्द्र जिज्ञासु, आजमगढ़ (उप्र.) (न्यासी)	शासकीय सेवा / वेद प्रचार	05462–221558

नाम और पता	पद / व्यवसाय	चल–दूरभाष
12. सुश्री ब्र. इन्दुबाला आर्या, हरिद्वार (उप्र.) (न्यासी)	वेद प्रचार	09412071736
13. श्री जितेन्द्र सिंह सिसोदिया (न्यासी) कुचामन सिटी (नागौर) राज.	कालेज व्याख्याता	09414468219
14. श्री देवव्रत शास्त्री (न्यासी) दिल्ली	वेद प्रचार	09719135850
15. श्री राजेन्द्र सिंह सोढ़ा (न्यासी) तातोल, जालोर (राज.)	अध्यापक	09414673352
16. श्री मूल सिंह चौहान (न्यासी) चौरा, जालोर (राज.)	पटवारी	02979–240112
17. श्री महेन्द्र सिंह चम्पावत (न्यासी) जेरण, जालोर (राज.)	अध्यापक	
18. श्री हुकुम सिंह देवड़ा (न्यासी) सुरावा, जालोर (राज.)	कृषि	
19. श्री विक्रम सिंह राव (न्यासी) लेटा, जालोर (राज.)	अध्यापक	
20. श्री पं. विपिन बिहारी (न्यासी) मथुरा, (उप्र.)	अध्यापक एवं वेद प्रचार	09219792057
21. श्री कमलेश रावल (न्यासी) सुमेरपुर, पाली (राज.)	अधिवक्ता	09829171710
22. श्री रामनिवास जांगिड़ (न्यासी) पाली (राज.)	व्यापार	02932–257321
23. श्री रघुवीर सिंह चौधरी (न्यासी) मथूरा (उप्र.)	व्यापार	09412281430
24. श्री चन्द्रशेखर लाहोटी (न्यासी) कड़ैल, अजमेर (राज.)	अध्यापक	0145–2780422

नाम और पता	पद/व्यवसाय	चल–दूरभाष
25. श्री मदन लाल सोमानी (न्यासी) अजमेर (राज.)	व्यापार	09452601833
26. श्री महेश बागड़ी (न्यासी) पाली (राज.)	मेल नर्स	09829220090
27. श्री दिनेश कुमार शर्मा (न्यासी) भरतपुर (राज.)		
28. श्री कंचन सिंह वानप्रस्थी (न्यासी) हरिद्वार (उत्तरांचल)	ध्यान एवं वैदिक स्वाध्याय	
29. श्री नरसिंह आर्य (न्यासी) पाली (राज.)	टेक्सटाइल डिजाइनर	09829252420
30. श्री मोक्षराज आर्य (न्यासी) अजमेर (राज.)	शासकीय सेवा	09828279418
31. श्री चौधरी देवेन्द्र आर्य (न्यासी) मथुरा (उप्र.)	अध्यापक	09719253837
32. श्री रमेश सुथार (न्यासी) जालोर (राज.)	पटवारी	09414565947
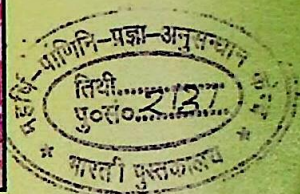
न्यास प्रमुख व आचार्य

पूज्य अग्निव्रतजी नैष्ठिक

जन्म स्थान - ऐंहन
जिला - हाथरस (उ.प्र.)
जन्म तिथि - भाद्रपद कृष्णा ९/२०१९

पितृनाम - श्री इन्द्रपाल सिंह जी
मातृनाम - श्रीमती ओमवती देवी जी
10 अक्टूबर 1962 (विद्यालयानुसार)

शिक्षा व अभिरुचि - सत्य-अहिंसा व अस्तेय के प्रति गहरी निष्ठा। देशभक्ति, न्यायप्रियता, स्वाभिमानी, वैज्ञानिक प्रतिभासम्पन्न (परमाणु नाभिकीय व खगोल), महान ऋषि-भक्त, गोभक्त, दयालुता आदि गुणों से अलंकृत हैं।

श्री अभिषेक आर्य

पितृनाम - श्री भूराराम जी
ग्राम - निम्बावास
जिला - जालोर
शिक्षा - उ. मा., विज्ञान, गणित
आजीविका - व्यापार

प्रकृति तथा व्यक्तित्व - उदारता, दानशीलता, नम्रता, परोपकारी, सत्यगुणग्राही, ज्ञानपिपासु, ऋषिभक्त, कर्त्तव्यनिष्ठ जैसे गुणों के धनी हैं।
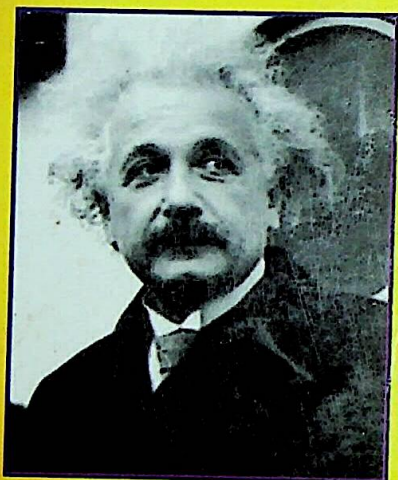
सर अल्बर्ट आइन्स्टीन

महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य : अधिक से अधिक पढ़ना व पढ़ाना

प्रतियाँ : 1500

संवत् : 2063